www.thearyasamaj.org

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

अष्टांगयोगादेव तु आत्मशुद्धिः

राष्ट्र,धर्म व मानवता के सबल रक्षक–
वेद, यज्ञ–योग–साधना केन्द्र आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़ की मासिक पत्रिका

नवम्बर 2013 मूल्य 15 रू.

आत्म-शुद्धि-पथ

मासिक

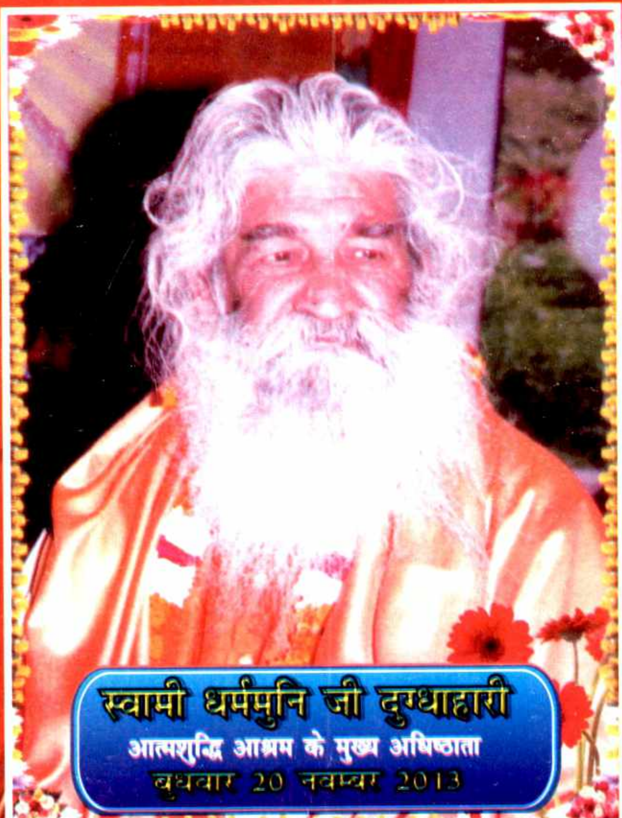

78वें जन्मदिवस के शुभावसर पर

बृहद् यज्ञ सुर और संगीत का भव्य आयोजन

(विवरण कवर पृष्ठ 3 पर)

www.thearyasamaj.org

ओ३म् ओ३म्

आत्मशुद्धि आश्रम संस्थापक कर्मयोगी
पूज्य श्री आत्मस्वामी जी महाराज

आत्मशुद्धि-पथ के नये आजीवन सदस्य बनें

848

श्री लक्ष्यपाल जी आर्य
ग्राम-माण्डौठी,
झज्जर, हरियाणा

849

श्री सीताराम जी शर्मा
एडवोकेट गुड़गांव, हरियाणा

852 श्री आनन्द प्रकाश आर्य
जुरासी, पानीपत,
हरियाणा

850

श्री सत्यप्रकाश जी वशिष्ट
पीतमपुरा, नई दिल्ली

851

आयु. चिराग तालान
सुपुत्र श्री कुलदीप
ग्राम + पोस्ट- वैना, अलीगढ़, यू.पी.

853 श्री राममेहर जी आर्य
समालखा, पानीपत
हरियाणा

प्रिय बन्धुओं! मास नवम्बर में अधिक से अधिक संरक्षक सदस्य एवं आजीवन सदस्य बनकर आगामी दिसम्बर अंक को अपने चित्र व नाम से पत्रिका को सुशोभित करें। सभी सदस्यों से निवेदन है कि वार्षिक शुल्क (मनीऑर्डर/ड्राफ्ट) द्वारा शीघ्र भेजें अथवा इलाहाबाद बैंक कोड संख्या IFSC-A0211948 में खाता संख्या 20481973039 में सीधे जमा कर सकते हैं। जिससे पत्रिका आपके पास निरन्तर पहुँचती रहे। -

-व्यवस्थापक

www.thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

आत्म-शुद्धि-पथ (मासिक)

कार्तिक-मार्गशीर्ष सम्वत् 2070 नवम्बर 2013

सृष्टि सं. 1972949113 दयानन्दाब्द 190

वर्ष-12) संस्थापक-स्वर्गीय पूज्य श्री आत्मस्वामी जी (अंक-11

(वर्ष 43 अंक 11)

प्रधान सम्पादक
स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी'
आचार्य राजहंस मैत्रेय

सह सम्पादक
स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, डॉ. मुमुक्षु आर्य

परामर्श दाता: गजानन्द आर्य

कार्यालय प्रबन्धक
आचार्य रवि शास्त्री
(8529075021)

उपकार्यालय प्रबन्धक
ईशमुनि (9991251275, 9812640989)
अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम
खेड़ा खुर्रमपुर रोड, फर्रुखनगर, गुडगांव (हरि.)

व्यवस्थापक: चन्द्रभान चौधरी

सदस्यता शुल्क

संरक्षक	: 7100 रुपये
आजीवन	: 1500 रुपये (15 वर्ष के लिए)
पंचवार्षिक	: 700 रुपये
वार्षिक	: 150 रुपये
एक प्रति	: 15 रुपये

विदेश में

वार्षिक : 20 डालर आजीवन : 350 डालर

कार्यालय : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़
जिला-झज्जर (हरियाणा) पिन-124507
दूर. : 01276-230195 चल. : 9416054195
E-mail : atamsudhi@gmail.com,
rajhansmaitreya@gmail.com

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ सं.
विविध समाचार	4
वेद सन्देश	5
सम्पादकीय : सुख के भ्रम में मानव	6
बौद्धों के शून्यवाद का खण्डन	7
परिवर्तन	9
सहज-सरल क्रियायोग	10
सर्वगुण सम्पन्न श्री रामचन्द्र जी का जीवन-चरित्र	12
क्रान्तिकारी संन्यासी का राष्ट्रभक्त आर्यसमाज	14
गले के रोगों का स्थाई उपचार	16
स्वस्थ बालों का यौगिक एवम् प्राकृतिक निदान	19
सतत अभ्यास से ही व्यक्तित्व का निर्माण होता है...	20
नारी! तुम मार्गदर्शिका हो	21
ग़ज़ल	23
हंसो और हंसाओ	24
नारी गौरव	24
युवाओं के सहयोग के बिना राष्ट्र निर्माण सम्भव नहीं	25
जीवन जीने की कला	27
जीवन	28
टंकारे का सितारा	29
भजन-जन्म का सदउपयोग	29
अनमोल वचन	30
समस्त मानव जाति के कल्याण के लिए-एक अमूल्य...	31
देवतास्वरूप भाई परमानन्द की 139वीं जयन्ती	32
वीर बन्दा सिंह बहादुर (343वीं वर्षगांठ)	33
दान सूची	34

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	5,100 रुपये
अंदर का कवर पृष्ठ	3,100 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	2,100 रुपये
आधा पृष्ठ	1,100 रुपये
चतुर्थ भाग	600 रुपये

समस्त सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। 'आत्मशुद्धिपथ' में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्यायक्षेत्र बहादुरगढ़, जि. झज्जर होगा।

www.thearyasamaj.org

माता सोनादेवी आर्या का स्वर्गवास व श्रद्धांजलि सभा

वैदिक संस्कृति के प्रचारक वैद्य जगन्नाथ खानपुर कलां सोनीपत की धर्मपत्नी श्रीमती सोना आर्या का आकस्मिक निधन दिनांक 16.10.2013 को सायं 6 बजे हृदयगति रुक जाने से हो गया। माता जी लगभग 80 वर्ष तक आर्य विचारों का पालन करती रही। उनके स्वर्गवास के बाद दिनांक 17.10.2013 को प्रातः काल वैदिक रीति के अनुसार दाह-संस्कार किया गया। मन्त्र पाठ श्री हरिशचन्द्र कर्नाटक तथा देवप्रकाश जी द्वारा किया गया। तत्पश्चात निरन्तर 12 दिन तक प्रातः यज्ञ व गीता-पाठ का कार्यक्रम चलता रहा। दिनांक 27-28 को उनके निवास स्थान गांव खानपुर कलां, सोनीपत में आचार्य राजहंस मैत्रेय जी, आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ। मन्त्रपाठ ब्र. जयपाल द्वारा किया गया। इस अवसर पर उपस्थित पारिवारिक जनों, इष्ट मित्रों, रिश्तेदारों तथा ग्रामवासियों ने तीन-तीन आहुतियां डालकर दिवंगत की आत्मा की शान्ति के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की।

दोपहर बाद श्रद्धांजली सभा का आयोजन किया गया। इस सभा में मुख्य वक्ता आचार्य राजहंस जी, मैत्रेय तथा प्रो. ओम कुमार जी उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, रोहतक रहे। वक्ताओं ने माता जी के द्वारा बताये मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। मैत्रेय जी एवं ओम कुमार जी ने आत्मा की अमरता, कर्मयोग की महिमा, जीवन और मृत्यु आदि विषयों पर अपने विचार रखते हुए श्रद्धा-सुमन अर्पित किए। उन्होंने वैद्य जगन्नाथ जी आर्य के दीर्घायु, स्वस्थ व नीरोग रहने तथा परिवार सकुशलता की मंगल कामना की।

वैद्य जगन्नाथ जी ने सभा में उपस्थित सभी का धन्यवाद किया। माता जी की आत्मा की शान्ति के साथ ही विश्व-शान्ति की कामना करते हुए शान्ति-पाठ किया गया तथा सभा विसर्जित की गई।

चतुर्थ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज पालिका कालोनी भिवानी रोड रोहतक का चतुर्थ वार्षिक उत्सव दिनांक 4 से 6 अक्तूबर 2013 तक मनाया गया। यज्ञ के ब्रह्मा वैदिक विद्वान् आचार्य वेदमित्र जी थे। वेदपाठ गुरुकुल गौतम नगर के ब्रह्मचारियों द्वारा किया गया। उत्सव में वेद सम्मेलन, राष्ट्ररक्षा सम्मेलन, गोरक्षा सम्मेलन में प्रो. ओमकुमार आर्य, महोपदेशक जगदीशचन्द्र वसु, सत्यवीर शास्त्री मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, श्री सुभाष बत्रा पूर्वमन्त्री हरियाणा सरकार, आचार्य बलदेव जी अध्यक्ष सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा नई दिलली, महावीर धीर, शम्भुमित्र जी शास्त्री आदि अनेक विद्वानों ने वेद, राष्ट्र व गोमाता के बारे में विचार रखे। उत्सव में 'करौंथा काण्ड' के शहीदों की श्रद्धाञ्जलि सभा का भी आयोजन किया गया। बहन दयावती आर्या, गायक पवनजीत आर्य, संजय आर्य ने मधुर गीतों से लोगों को आनन्दित किया।

प्रो. कथूरिया सम्मानित

राजस्थान के अग्रणी साहित्यिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक प्रतिष्ठान, साहित्य-मण्डल ने हिन्दी लाओ, देश बचाओ समारोह के अवसर पर भावनगर विश्वविद्यालय, भावनगर (गुजरात) के पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष एवं प्रोफेसर डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया को 'श्री मनोहर कोठारी सम्मान' से सम्मानित करते हुए ग्यारह हजार रूपये की सम्मान राशि के साथ अभिनन्दन पत्र, प्रशस्ति पत्र, श्रीनाथ जी की स्वर्णिम आभा की प्रतिमा, शाल, अंगवस्त्र एवं श्री फल भेंट किए।

मानव जीवन बड़ा ही महत्वपूर्ण है इसे मनुष्य चाहे तो देवत्व की ओर ले जा सकता हैं और चाहे तो पतन की ओर ले जा सकता है। अब उसे यह विचरना है कि पतन की ओर जाने में कष्ट एवं पीड़ाओं का अनुभव होता है। अतः उसे चाहिए कि वह निरन्तर देवत्व के मार्ग का अनुगमन करें।

–विक्रमदेव शास्त्री

www.thearyasamaj.org

वेद सन्देश

प्रभु मेरी हालत पर तरस खाओ

- डॉ. रामनाथ वेदालंकार

सं मा तपन्त्यभितः सपत्नीरिव पर्शवः।
निबाधते अमतिर्नग्नता जसुः, वेर्न वेवीयते मतिः॥

ऋग् 10.33.2

ऋषिः **कवषः ऐलूषः**। देवता **इन्द्रः**। छन्दः **बृहती**।

(**पर्शवः**) पार्श्व अस्थियाँ, पसलियाँ, (**सपत्नीः इव**) एक पति की अनेक पत्नियों के समान, (**अभितः**) दोनों ओर से, (**मा**) मुझे, (**सं तपन्ति**) संतप्त कर रही हैं।, (**अमतिः**) मतिहीनता, (**नग्नता**) नग्नता (और), (**जसुः**) दुर्बलता, मृत्यु, (**निबाधते**) पीड़ित कर रही हैं, (**वेः न**) पक्षी (की मति) के समान, (**मतिः**) (मेरी) मति, (**वेनीयते**) अतिशय कांप रही हैं।

हे भगवन्! देखो तो, मैं क्या-से-क्या हो गया! तुमने राजा बनाकर मुझे इस देह-रूप अयोध्यापुरी में भेजा था। पर राजा होना तो दूर रहा, मै तो दीन-हीन-दरिद्र होकर निवास कर रहा हूँ। एक समय ऐसा अवश्य था, जब मैं उन्नति के शिखर पर आसीन था। जहाँ कहीं मैं निकल जाता था, वहाँ मेरा स्वागत होता था, सब दुर्जन मुझसे थर-थर कांपते थे और सब सज्जन मुझे अपने मध्य पाकर प्रफुल्ल हो जाते थे। पर आज तो मेरी अपनी पार्श्व-अस्थियाँ ही मुझे चुभ रही हैं, जैसे एक पति की अनेक पत्नियाँ उसे सन्तप्त करती हैं। मुझे मतिहीनता ने घेर लिया है, अविचारशीलता ने अपने पंजे में कस लिया है। जहाँ मैं किसी समय मतिमानों में अग्रणी माना जाता था, वहाँ अब अविवेक और किंकर्तव्यविमूढ़ता से ग्रस्त हूँ। नग्नता भी अपने पैर फैला रही है। जहाँ मैं भौतिक सम्पत्ति से नग्न हो गया हूँ, वहाँ साथ ही मेरी आध्यात्मिक सम्पत्ति भी लूट गई है। शारीरिक और मानसिक दुर्बलता भी पीड़ित कर रही है। शरीर से चला नहीं जाता, गिर-गिर पड़ता हूँ। मन मर गया है, उत्साह समाप्त हो गया है, इच्छा-शक्तियाँ और महत्त्वाकांक्षाएँ किनारा कर गई हैं।

जैसे सामने बहेलिये को देखकर पक्षी की मति कांपने लगती है, वैसे ही अपने ही सम्मुख मृत्यु को नाचता देखकर मेरी मति भी कांप रही है। शारीरिक मौत और आध्यात्मिक मौत का नग्न ताण्डव मेरे आगे हो रहा है। मैं उससे त्राण पाने के लिए आकुल हो रहा हूँ, पंख फड़फड़ा रहा हूँ, बेचैनी से करवटें बदल रहा हूँ। हे प्रभु! इस दुरवस्था से, इस भीषण परिस्थिति से, मेरा उद्धार कर दो। तुम्हारे अतिरिक्त इस समय कोई साथी दृष्टिगत नहीं हो रहा। तुम्हीं रक्षक हो, तुम्हीं खिवैया हो, तुम्हीं मंझधार से पार करानेवाले हो। हे प्रभु! मेरी हालत पर तरस खाओ, मुझे अपनी शरण में ले लो।

योगाश्चत्तवृति निरोधः

(दयाशंकर गोयल, 1554 डी, सुदामा नगर, इंदौर)

चित्तवृत्तियों का निरोध करना ही योग कहाता।
जो कि व्यक्ति को आत्म उन्नति के पथपेले जाता।।
चित्तवृत्तियां जो प्राय: मन पर हैं छाई रहती।
वे ही पशुप्रवृत्तियों में उसको उलझाए रहती।।
जिससे उच्च ध्येय तज के चित्त रहता सदा भटकता।
आत्मोन्नति के लिए प्रगति के पथ पे नहि बढ़ सकता।।
ये निद्रा, प्रमाण, विषर्यय अरू विकल्प, स्मृति हैं।
जो कि आत्म-परमात्म मिलन में बाधाऐं सृजती है।।
भोगे गये इन्द्रिय भोगों के संस्कार की छाया।
के गत दृश्यों को उभार, उद्वेलित कर मन, काया।।
इन्द्रिय विषयों के प्रसंगों में 'प्रमाण' उलझाती।
और 'विषर्यवृत्ति'' सदा प्रतिकूल हि ज्ञान कराती।।
जिससे-सत्य वस्तु-स्थिति का ज्ञान ही हो पाल।
अरु कस्तुरी मृग के जैसा चित रहता भटकाता।।
'विकल्पवृत्ति' संदेह, अशंका, कायरता, भय लाती।
''निंद्रा'' आलस, तम, उपेक्षा अरू अवसाद बढ़ाती।।
''स्मृतिवृत्ति''-नीच योनि के अभ्यासों की स्मृति।
को उभार मानव मर्यादाओं की करके दुर्गति।।
ऐसे कार्य करालेती जिससे साधक गिरजाता।
अस्तु, अवश्यक साधक को इनका निरोध हो जाता।।
ये निरोध-संघर्ष अष्ठधा सोपानों में क्रमशः।
दुष्प्रवृतियों को ध्वस्त कर तत्वज्ञान की घुतितः।।
स्वात्म को परमेश्वर से है ऐसा मिलवाता।
कि स्वात्म, परमानन्द पाके शान्त तृप्त हो जाता।।
चेतन शक्ति स्व स्वरूप में है प्रतिष्ठ हो जाती।
जिससे, आनन्द, शक्ति, सिद्धि, सब कुछ सुलभ्य हो जाती।।

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय

सुख के भ्रम में मानव

आज वैज्ञानिक युग है सभी ओर मानव उपयोगी सुविधाओं का अम्बार लगता जा रहा है। संभवत: मनुष्य मात्र का यही एक मात्र विचार है कि वह सभी प्रकार की सुविधाओं का संग्रह करके फिर वह बाधा रहित हो आनन्दपूर्वक जीवन जी सकेगा। इस तरह का विचार मानवीय उच्चतम् ज्ञान का उपहास है इससे स्पष्ट होता है कि वह केवल शरीर और इन्द्रिय सुख की बहुत ऊपरी परिधि पर ही जी रहा है। यदि ऐसा ही चलता रहा तो पूरी पृथ्वी एक दिन मानव जाति के पागलपन से भर जायेगी। जहां सब कुछ तो होगा पर सुख नाम की कोई चीज नहीं होगी क्योंकि मनुष्य मात्र जहां जीता है। वहां केवल मानव की कल्पनाओं का संसार है और कल्पनाएं पूर्ण होकर भी अपूर्ण ही रहती हैं यही देखने को मिलता है। मानव को अपने लक्ष्य का बोध नहीं है यदि है तो वह मोहग्रस्त होकर केवल बार्हिगामी बना हुआ है जिससे वह अपना भला नहीं कर सकता। एक कवि न सुन्दर लिखा है

संसार के मोह में यह आदमी तो लीन हो गया है।
विषय वासनाओं में मन इसका मलीन हो गया है।
अन्दर कूड़ा करकट बाहर क्लीन हो गया है।

इस प्रकार उलझकर वह स्व. कल्याण से अपरिचित है उसे अपने मूल केन्द्र के पास वापिस लौटने की चिन्ता नहीं है और न ही उसके पास इसकी विद्या है और बिना ज्ञान या विद्या के मानव अपना कल्याण कैसे कर सकता है। यदि उसे ज्ञान है तो मात्र जीवन निर्वाह कैसे किया जाये, इसका ज्ञान है जो अवश्य होते हुए भी अपर्याप्त है। कष्ट दूर करने के जो साधन उसके पास है, वे क्षणिक हैं। उनसे पूर्ण लाभ प्राप्त की आशा नहीं की जा सकती। यदि मानव अपना कल्याण यथार्थ रूप से नहीं कर रहा है तो उसके पास इसका अज्ञान या अविद्या ही है। क्योंकि कहा गया है कि **सा विद्यया या विमुक्तये** अर्थात वह विद्या जो मुक्त करे परन्तु आज की विद्या तो मानव मात्र को एक ऐसे चक्र में फंसाये हुए है जो न उसे बाहर निकलने देती न इसे सुखी करती है। इस तरह भी विद्या को आचार्य चाणक्य ने किसी काम की नहीं कहा।

शुन: पुच्छमिव व्यर्थ जीवितं विद्यया बिना।
न गुह्यगोपने शक्तं न च दंश निवारणे॥

अपने कल्याण की विद्या के बिना मनुष्य का जीवन कुत्ते की उस पूंछ के समान हो जाता है। जिससे न तो वह अपने शरीर के गुप्त भागों को ढक सकता है और न ही काटने वाले मच्छरों आदि से स्वयं को बचा सकता है। आज की मानव जाति की स्थिति पूरी तरह से इसी के समान बैठती है। आज की विद्या न तो व्यक्ति को मुक्त होने दे रही और नहीं उसे मुक्त कर रही यह कैसी विडम्बना है।

मानव मात्र को अपने हित को ठीक तरह से समझना होगा कि उसका हित कहां है। उसे अपनी जीवनशैली को बाह्य परिधि से हटाकर अपने जीवन के मौलिक केन्द्र की ओर ले जाना होगा जहां से हमारा जीवन संचालित है। और वहीं है हमारी आत्मा, शारीरिक स्तर पर जीते हुए हमें अपनी आत्मा से परिचित होना पड़ेगा इसके अतिरिक्त मानव मात्र का सुखी होना असंभव है। सभी वेद उपनिषद और गीता आदि शास्त्रों में आत्मज्ञान को ही समस्त दु:खो से छूटने का उपाय बताया है। आत्मा को जानने से ही सब जान लिया जाता है। इसके बिना सब कुछ जानकर भी कुछ नहीं जाना जाता। ऐसा सर्वत्र देखने को मिलता है।

– राजहंस मैत्रेय

आनन्दपूर्ण जीवन हेतु

दु:ख, अशान्ति, तनाव, वैमनस्य आदि भावों को रूपान्तरित कर सुख शांति, प्रेम करूणा एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण, मानसिक दुर्भावनाओं से निर्जरा स्वयं के व्यक्तित्व का सम्यक् विकास और जीवन को आह्लादपूर्ण बनाने वाली मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया द्वारा लाभान्वित होने के लिए आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ जिला झज्जर, हरियाणा में आप सादर आमन्त्रित हैं।

–राजहंस मैत्रेय, मो. 9813754084

www.thearyasamaj.org

बौद्धों के शून्यवाद का खण्डन

- राजहंस मैत्रेय जी, आचार्य आत्मशुद्धि आश्रम

गत अंक में बौद्धों के क्षणिक वाद के खण्डन में कारणकार्य का अभाव बताया गया था अन्वय व्यतिरेक की व्यवस्था न बनने से उसमें दोष दिखाया गया।

अब पुनः बौद्ध आशंका करता है कि कारण, कार्यकाल में नहीं रहता अपितु कार्य से पूर्व रहता है। पहले-पहले क्षण बाद बाद वाले क्षण से पहले ही रहते हैं इसलिए उनका कारण कार्य भाव हो सकता है इसी शंका का समाधान दिया गया है।

पूर्वभावमात्रे न नियमः॥41॥

पदार्थ-पूर्व **भावमात्रे**=कारण को कार्य का पूर्णभाव मानने में **नियम**=उपादान एवं निमित्त कारण का नियम **न**=नहीं होता अर्थात् कारण को कार्य पूर्वभाव मानने में उपादान कारण एवं निमित्र कारण का नियम नहीं हो सकता।

कार्य से पहले उपस्थित होने वाले को कारण मान लिया जाय और कार्य काल में उपस्थित रहने का नियम न हो तो निमित्त कारण और उपादान कारण का कोई नियम नहीं बन पाता। दोनों में भेद नहीं हो पाता क्योंकि पूर्व भाव मात्र उपादान तथा निमित्त कारण दोनों में समान है परन्तु दोनों में कोई भेद न होने से दोनो का पृथक ज्ञान नहीं हो पाता। यह कार्यकाल में विद्यमान होने से सम्भव हो सकता है। और तुम्हारे मत में पहले-पहले क्षण बाद बाद के क्षण में विद्यमान नहीं इसलिए उनका कारण कार्य भाव नहीं हो सकता इसलिए उसके न होने से आप का मत असंगत एवं अमान्य है।

अब दूसरा कोई शंका करता है कि विज्ञान से अतिरिक्त दूसरा कोई तत्व नहीं बन्ध भी विज्ञान है। यहां इसी का समाधान किया जाता है।

न विज्ञान मात्रं बाह्य प्रतीतेः॥42॥

पदार्थ- विज्ञान मात्र=विज्ञान मात्र ही पदार्थ **न**=नहीं, **बाह्य प्रतीतेः**=बाहर भी पदार्थ प्रतीत होते हैं। अर्थात् विज्ञान मात्र ही पदार्थ नहीं, बाहर भी प्रतीत होते हैं। बौद्धों में योगाचार (विज्ञान वादी एक सम्प्रदाय है) जो मानता है कि जैसे स्वप्न दिखाई देते हैं वैसे ही जो दीखने वाले बाहर पदार्थ हैं। इनका अस्तित्व नहीं है यह केवल प्रतीत होते हैं। इसे ही विज्ञान कहते हैं उनका मानना है कि विज्ञान ही एक मात्र पदार्थ है और कुछ नहीं। बाहर पदार्थों का कोई अस्तित्व नहीं। यह कहना प्रत्यक्ष के विरुद्ध है। क्योंकि स्वप्न भी बाह्य पदार्थ की स्मृति से हैं। स्वप्न भी बाह्य पदार्थों की स्मृति आते हैं। स्वप्न भी बाह्य पदार्थों पर निर्भर है। अतः कहा जा सकता है कि विज्ञान ही एक पदार्थ नहीं अपितु बाह्य भी प्रत्यक्ष पदार्थों का अनुभव होता है।

अब योगाचारी पुनः कहते हैं कि दृश्यमान जगत् विज्ञान के अतिरिक्त कुछ नहीं किन्तु विज्ञान ही स्वप्न ज्ञान के समान पदार्थ रूप में प्रतीत होता है। अब यहां इसका समाधान किया जाता है।

तदभावे तदभावाच्छून्यन्तर्हि॥43॥

पदार्थ-तर्हि=यदि विज्ञान के अतिरिक्त बाह्य पदार्थ न स्वीकार करें तो तदभावे=उनके न होने के कारण **तदभावात्**=उस विज्ञान का भी असंभव होने से **शून्यम्**=एकमात्र शून्य ही शेष रहता है। अर्थात् यदि विज्ञान के अतिरिक्त बाह्य पदार्थ ने स्वीकार करें तो उनके न होने के कारण वह वह विज्ञान भी असंभव होगा और शून्य मात्र शेष रहेगा।

दीखने वाले संसार में बाह्य पदार्थों को स्वप्न के समान भ्रान्त होने से यानि उनका यथार्थरूप में अभाव माननेपर विज्ञान भी नहीं होगा क्योंकि विज्ञान भी बाह्य जगत की स्मृतियों पर ही निर्भर करता है। फिर तो केवल शून्य मात्र ही शेष रहेगा जो पूणतिया अमान्य है।

अब पुनः आशंका है कि यदि सब शून्य ही मान लिया जाये तो कोई हानि नहीं। न आत्मा न कोई बन्धन न कोई मोक्ष, सब कुछ विनाशील तुच्छ है। इस सूत्र द्वारा यही कहा जाता है।

शून्य तत्त्वं भावो विनश्यति वस्तु धर्मत्वाद्विनाशस्य॥44॥

पदार्थ- शून्यं=शून्य ही **तत्त्वं**=एक पदार्थ है क्योंकि **भावः**=जो विद्यमान है। वह **विनश्यति**=नष्ट

www.thearyasamaj.org

हो जाता है। और नाश होना वस्तु **धर्मत्वात्**=पदार्थमात्र का धर्म है। अर्थात् शून्य ही एक मात्र तत्व है। क्योंकि जो विद्यमान पदार्थ है उनका नाश हो जाता है और नाश होना वस्तु मात्र का धर्म है।

अब आध्यामिक शून्यवादी कहता है कि पदार्थ मात्र का नाश होना स्वाभाविक धर्म है। यानि सभी वस्तुमात्र का नाश हो जाता है। जो पदार्थ प्रारम्भ वाला है। वह अन्त वाला भी अवश्य ही होता है। वह बीच में भी स्वप्न के समान मिथ्या ही प्रतीत होता है। एक उक्ति है **आदावन्ते च यन्नास्ति वर्तमानेऽपि तत्तथा** अर्थात् जो पदार्थ आदि और अन्त में नहीं है। बीच में भी नहीं है। इस प्रकार पदार्थ मात्रदि मध्य अन्त में न होने से सम्पूर्ण जगत् भी शून्य ही सिद्ध होता है और यही एक यथार्थ वस्तु है। अब इसका समाधान किया जाता है।

अपवाद मात्रमबुद्धानाम॥45॥

पदार्थ-अबुद्धाधानाम्=पदार्थो का नाश होना अल्प ज्ञानियों का **अपवादमात्रम्**=प्रलाप मात्र है। अर्थात् पदार्थो का नाश होना अल्प ज्ञानियों का प्रलाप मात्र है।

सभी अवयव वाले पदार्थ विनाशी है और निरयव वाले पदार्थ अविनाशी है। यह प्रत्यक्ष देखने को मिलता है। मिट्टी के कणों का संयोग घट है। संयोगनाश घट का नाश है जो टुकड़े रहित पदार्थ है। उनका कभी नाश नहीं होता उन्हें ही निरअवयव वाले पदार्थ कहते हैं। उपादान कारण वाले पदार्थ सभी आरम्भ न होते हैं और आरम्भ संयोगवाला है। वह कभी भी निखदन नहीं होता अत: यह यह कहना सब पदार्थ सब पदार्थ विनाशी है यह अमान्य है।

अब शून्यवाद के पक्ष कथन अमान्य है यह ही कहा जाता है।

उभय पक्ष समानक्षेमत्वादयमपि॥46॥

पदार्थ-उभय पक्ष समानक्षेमत्वात्=पूर्व कहे गये पक्षो के समान भी **अयम्-अपि**=यह शून्य शून्यवाद वाला पक्ष भी अमान्य है। अर्थात् पूर्व पक्षों को जैसे अस्वीकृत किया उसी तरह भी इसे भी अस्वीकृत करते है।

बोद्धों में चार प्रकार के मुख्य रूप से विचार जाते है। सौत्रान्तिक वैभाषिक योगाचार और माध्यमिक, इनमें सौत्रान्तिक और वैभाषिक का बाहय क्षणिकवाद, मुख्य रूप से समान है। और योगाचार विज्ञानवादी का मुख्य रूप से मानना है। केवल चित्त में वस्तुओं की प्रतिती होता है। वे बाहर नहीं है। यह दूसरा पक्ष है। और तीसरा पक्ष है। माध्यामिकों अर्थात् शून्यवादियों का यह केवल शून्य को ही मानते है और कुछ नहीं पक्षों में जैसे पहले पक्ष अमान्य है। वैसे ही तीसरा पक्ष भी अमान्य है। अब शून्यवाद के अमान्य होने का कारण बताया जाता है।

अपुरुषार्थत्वमुभयथा॥47॥

पदार्थ-उभयथा=दु:खो की अत्यन्त निवृत्ति और इनका उपाय, इन दोनों में से एक भी न होने के कारण शून्य **अपुरुषार्थत्वम्**= अपुरुषार्थ है। अर्थात दु:खो की अत्यन्त निवृति और निवृत्ति के उपाय इन दोनों में से एक भी न होने के कारण ''शून्य'' अपुरुषार्थ है।

बौद्धों में सब शून्य है और आत्म तत्व जैसी कोई वस्तु नहीं तो दु:खो की अत्यन्त निवृत्ति किया के लिए है। इसलिए सब शून्य होने से सब कुछ अपुरुषार्थ ही है। जो अस्वीकृत है।

अब बौद्धमत से पुरुष के बन्ध के निमित्त का उपपादन न हो इसलिए उनका खण्डन किया है।

न गति विशेषात्॥48॥

पदार्थ-गति विशेषात=गति विशेष से भी, पुरुष का बन्ध **न**= नहीं हो सकता। गति विशेष से भी पुरुष का बंध नहीं हो सकता क्योंकि

निष्क्रियस्य तदसम्भवात्॥49॥

पदार्थ-निष्क्रियस्य=क्रिया परिणाम रहित होने के कारण उसमें **तदसम्भवात**= गति का होना सम्भवन है। अर्थात् क्रिया परिणाम रहित होने के कारण उसमें गति का होना संभव नहीं।

संसार में स्वर्ग, कर्म, लोक परलोक आदि में गमन की बातें कहीं जाती है। इसलिए पुरुष के गमन और आगमन का नाम गति विशेष है। इस गति विशेष कहना चाहते हैं कि पुरुष को लोक और परलोक गमन ही बन्ध है। यदि पुरुष का कही आना नाना न हो तो उसे बन्ध नहीं हो सकता।

इसलिए पुरुष को गति विशेष से बन्ध नहीं माना जा सकता क्योंकि उत्पन्न और विनाशी होने के कारण गति एक प्रकार का विकार है वह परिणाम पदार्थ से ही सम्भव हो सकता है अपरिणामी में नहीं पुरुष कूटस्थ होने से अपरिणामी है। उसमें गति का होना सम्भव नहीं अत:

www.thearyasamaj.org

पुरुष का गति विशेष से बन्ध मानना ठीक नहीं।

हमारी मान्यता में जीव मध्यम परिणाम है। इसलिए उसकी गति सम्भव है। इसी का उत्तर दिया जाता है।

मूर्त्तत्वाद घटादिवत्समान धर्मापत्तावप सिद्धान्तः॥50॥

पदार्थ-घटादिवत्=घड़े मध्यम परिणाम होने से सावयव तथा विनाशी है। इसी तरह पुरुष भी **मूर्त्तत्वात्**=मध्यम परिणाम वाला होने से **समानधर्मापत्तौ**=अवयवी और विनाशी हो जायेगा और ऐसा होने से **अपसिद्धान्तः**=आपके सिद्धान्त की हानि होती है। अर्थात् घड़े के मध्यम परिणाम वाला होने से अवयवी और विनाशी हो जायेगा तथा ऐसा होने से आपके सिद्धान्त की हानि है।

जीवात्मा को नित्य माना गया है। यदि उसे घड़े आदि पदार्थो के समान मध्यम परिणाम वाले माने तो वह सावयव होने से नित्य हो जायेगा। क्योंकि जो पदार्थ मध्यम परिणाम वाला होता है। वह अवयवी होता है और अवयवी पदार्थ अनित्य होता है। ऐसा नियम है। इसलिए आत्मा को मध्यम परिणाम वाला मान कर मति विशेष के बन्ध मानना ठीक नहीं।

परिवर्तन

(जयदेव हसीजा वानप्रस्थी)

परिवर्तन बिगड़े जीवन में लाना चाहिए जरूर
शर्त यह है प्रथम, त्यागिए अपना गरुर!
आधार परिवर्तन का तो हैं अपने विचार
मनोभूमि में इसलिए बीजिए श्रेष्ठ संस्कार!
संग सत् पुरुषों का श्रेष्ठता जीवन में लाएगा
व्यक्तित्व आपका एक श्रेष्ठ ढाचें में ढल जाएगा।
निरन्तरता सत्संग की स्वाध्याय की अनिवार्य है
मस्तिष्क में स्थिरता उत्कृष्ठ विचारों की अनिवार्य है।
निर्माण को, सुविचारों के आवश्यक मानना चाहिए
संयम अपना कर कुविचारों को भगाना चाहिए।
उपवास, ब्रह्मचर्य, प्राणायाम, व्यायाम और मनन
हो अपनी दिनचर्या में जाप, मौन और पूजन!
साधना के लिए हो केवल श्रेष्ठ प्रवृति का साथ
त्यागिए हरगिज़ नहीं गायत्री माता का हाथ।
'प्रेमी' तेरा बिगड़ा जीवन परिष्कृत हो जायेगा
''वानप्रस्थी'' नाम तेरा समाज में प्रतिष्ठित हो जायेगा।

- 124, विस्ता विलाज, सैक्टर-46, गुड़गांव

धूप अगरबत्ती एवं गायत्री महिमा हवन सामग्री

ऋतु अनुकूल

उत्तम प्रकार की जड़ी-बूटियाँ द्वारा संस्कार विधि के अनुसार
केवल उपकार की भावना से लागत-मात्र मूल्यों पर उपलब्ध

विशिष्ट	23.00	रु. प्रति किलो
उत्तम	28.00	रु. प्रति किलो
विशेष	45.00	रु. प्रति किलो
डीलक्स	65.00	रु. प्रति किलो
सुपर डीलक्स	120.00	रु. प्रति किलो

इसके अतिरिक्त अध्यात्म सुधा विधि के अनुसार हर प्रकार की हवन सामग्री आर्डर पर तैयार की जाती है।

निर्माता :

मै. लाजपतराय सामग्री स्टोर

856, कुतुब रोड, दिल्ली-110006

फोन : दुकान-23535602, 23612460, फैक्ट्री-32919010, निवास-25136872

www.thearyasamaj.org

सहज-सरल क्रियायोग

– महात्मा ओममुनि

मानव मात्र के कल्याण हेतु दयालु ऋषि पतंजलि जी महाराज ने योगदर्शन जैसे दिव्य ग्रन्थ की रचना की। योगदर्शन के समाधि पाद में उन्होंने समाहित चित्तवाले योग के उत्तम अधिकारियों के लिए योग का स्वरूप, उसके भेद और उसका फल सम्प्रज्ञात तथा असम्प्रज्ञात समाधि का विस्तार से वर्णन किया है। किन्तु जिनके चित्त विक्षिप्त है, संसारिक वासनाओं तथा राग-द्वेष से कलुषित है, उनके लिए अभ्यास और वैराग्य का होना कठिन है, उनका चित्त भी शुद्ध होकर अभ्यास और वैराग्य को सम्पादन कर सके इस अभिप्राय से चित्त की एकाग्रता के लिए तथा योग के अंगो में प्रवृत कराने से पूर्व चित्त शुद्धि का एक सरल और उपयोगी उपाय साधन पाद के प्रारम्भ में क्रियायोग बतलाते हैं-

"तपः स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि क्रियायोगः।"

अर्थात् तप स्वाध्याय और ईश्वरप्रणिधान को क्रियायोग कहा जाता है। तप- जिस प्रकार अश्व विद्या में पारंगत कुशल सारथि नये व चंचल घोड़ों को साधता है, उसी प्रकार शरीर, प्राण, इन्द्रियों और मन को उचित रीति और अभ्यास से वश में करने को तप कहते हैं। जिससे गर्मी-सर्दी, भूख-प्यास, सुख-दुःख, हर्ष-शोक और मान-अपमान आदि सभी द्वन्द्वों की अवस्था में बिना विक्षेप के स्वस्थ शरीर और निर्मल अन्तःकरण के साथ योगमार्ग में प्रवृत रह सके। अतः योग साधकों को सर्वप्रथम तपरूप साधन का उपदेश किया गया है।

"तच्च चित्तप्रसादन-बाधामानमनेनाऽऽसेवयूमिति मन्यते।"

जो तप चित्त की प्रसन्नता का हेतु हो तथा शरीर इन्द्रियादि का पीड़ाकारक न हो, वही तप सेवनीय है।

जिस प्रकार अग्नि में तपाने से धातु का मल भस्म हो जाने पर उसमें स्वच्छता और चमक आ जाती है, इसी प्रकार तप की अग्नि में शरीर, इन्द्रियों आदि का तमोगुणी आवरण के नष्ट हो जाने पर उनका सत्त्वरूपी प्रकाश बढ़ जाता है। सात्विंक आहार-विहारादि शरीर के तप माने गये है तथा प्रत्याहार और शम-दम आदि इन्द्रियों तथा मन के तप हैं।

नात्यश्नतस्तु योगोऽस्ति न चैकान्तमनश्नतः।
न चातिस्वप्नशीलस्य जाग्रतोनैव चार्जुन॥ गीता-6/16

यह योग न तो बहुत अधिक खानेवाले को और न कोरे उपवासी को वैसे ही न बहुत सोनेवाले को और न बहुत जागने वाले को प्राप्त होता है।

युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु।
युक्त स्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा॥ गीता-6.17

जो मनुष्य आहार-विहार में, दूसरे कर्मों में और सोने-जागने आदि में नियमित रहता है, उसका योग दुःखनाशक होता है।

युक्ताहार (मिताहार)-स्निग्ध, मीठा, प्रिय आहार भूख के अनुसार कम मात्रा में प्रभु की प्रीति के लिए जो किया जाता है, वही मिताहार कहा जाता है। तामसी, राजसी, हिंसा से प्राप्त हुए तथा गरिष्ठ, वात-कफकारक, अतिउष्ण, खट्टे, चरपरे, बासी, अतिरूक्ष, सूखे हुएं, रूखे, सड़े हुए, जूठे, नशा करने वाले, उत्तेजक, स्वास्थ्य के लिए हानिकारक पदार्थों को त्यागकर केवल शुद्ध, सात्विक हलके मधुर, रसदार, ताजा, स्वास्थ्यवर्धक, चित्तको प्रसन्न करने वाले पदार्थ जैसे दूध, घृत, ताजे रसदार मीठे सात्विक फल, सात्विक अन्न, सब्जी व फल भूख से कम मात्रा में लें।

युक्त विहार-लम्बी कठिन यात्रा न करना जिससे भजन-साधना में विघ्न न पड़े। आलसी बनकर बिल्कुल निट्ठला न बैठा जाये, बल्कि इतना चलना-फिरना व घूमना चाहिए जिससे शरीर स्वस्थ और चित्त प्रसन्न रहे और साधना सफलतापूर्वक हो सके।

युक्त कर्म चेष्टा- नियमित रूप से कर्त्तव्य तथा नियत सत्कर्मों को नित्य करते रहना अर्थात् न इतना अधिक परिश्रम कि जिससे थकान उत्पन्न हो और सर्वथा कर्त्तव्यहीन होकर आलसी बन जाना।

युक्तस्वप्नावबोध-रात्रि में सात घण्टे से अधिक न सोना जिससे तमोगुण न बढ़े और न चार घण्टे से कम सोना जिससे साधना में नींद न सताये।

वाणी का तप-वाणी को संयम में रखना। केवल सत्य, प्रिय व आवश्यकतानुसार दुसरों से यथायोग्य सम्मानपूर्वक व्यवहार करते हुए वाणी से वचन निकालना। वाणी को संयम में रखते हुए सप्ताह में एक दिन मौनव्रत रखना प्रशस्त है। वाणी को संयम रखने का यत्न किये बिना देखा-देखी मौन रखना मिथ्याचार है।

मन का तप- मन को संयम में रखना अर्थात् हिंसात्मक, क्लिष्ट भावनाओं तथा अपवित्र विचारों को मनसे हटाते हुए अहिंसात्मक, अक्लिष्ट भावनाओं और शुद्ध विचारों को मन में धारण करना है। इस प्रकार क्लिष्ट विचारों पर विजय प्राप्त करने के पश्चात् सब प्रकार के विचार भविष्य

www.thearyasamaj.org

के संकल्प-विकल्प और भूतकाल की स्मृति से मन को शुन्य करने का अभ्यास करना चाहिए।

स्वाध्याय- वेद-शास्त्रों, उपनिषद् आदि तथा योग और सांख्य अध्यात्म सम्बन्धी विवेक ज्ञान उत्पन्न करने वाले सत् शास्त्रों का नियमपूर्वक अध्ययन और ओंकार सहित गायत्री आदि मन्त्रों का जप स्वाध्याय कहलाता है। प्रतिदिन सोने से पूर्व अपने अच्छे-बुरे मन-वचन-कर्म से किए गये व्यवहार का अन्तःकरण में अवलोकन करना। अशुभ चिन्तन व कार्यो को त्यागना व कल्याणकारी शुभ संकल्पों को ग्रहण करना। ओंकार सहित गायत्री जंप-भगवान् मनु लिखते हैं-

ओंकार पूर्विकास्तिस्त्रों महाव्याहृतयोऽव्याः।
त्रिपदा चैव सावित्री विज्ञेयं ब्रह्मणो मुखम्॥

अर्थात् तीन मात्रा वाले ओकार-पूर्वक तीन महाव्याहृतियों और त्रिपदा सावित्री को ब्रह्म का मुख (द्वार) जानना चाहिए। गायत्री मन्त्र निम्न प्रकार से है-

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोधयात्॥

अर्थात् सब प्राणियों के परम पिता-माता, ज्ञानरूप, प्रकाश के देने वाले देव के उस उपासना करने योग्य शुद्धस्वरूप का हम ध्यान करते है, जो हमारी बुद्धियों को ठीक मार्ग में प्रवृत्त करे।

बुद्धि और चित के पवित्र होने से सन्मार्ग की प्राप्ति, संस्कारों की निवृत्ति और जन्म, आयु और भोग से मुक्ति हो सकती है। गायत्री मन्त्र में विशेष रूप से बुद्धि व चित की पवित्रता के लिए प्रार्थना की गई है।

गायत्रयास्तु परे नास्ति शोधनं पापकर्मणाम्।
महाव्याहृतिसंयुक्तां प्रणवेन च संजपेत्।

संवर्तस्मृति श्लोक-218

अर्थात् गायत्री से बढ़कर पाप कर्मो का शोधक दूसरा कुछ भी नहीं है। प्रणव (ओंकार) सहित तीन महाव्याहृतियों से युक्त गायत्री मन्त्र का जप करना चाहिए।

ईश्वर प्रणिधान-ईश्वर की विशेष भक्ति और शरीर, इन्द्रियों, मन व बुद्धि आदि सभी बाह्य व आन्तरिक करणों, उनसे होने वाले सारे कर्मों और उनके फलों को ईश्वर के समर्पण कर देना तथा ईश्वर के मुख्य नाम ओ३म् का उसके अर्थो की भावना सहित मानसिक जप करना है।

कामतोऽकामतो वापि यत् करोमि शुभशुभम्।
तत्सर्व त्वयि संन्यस्तं त्वत्प्रयुक्तः करोम्यहम्॥

फलेच्छा से या निष्कामता से जो शुभाशुभ कर्म का मैं अनुष्ठान करता हूँ वह सब आप परमेश्वर के ही मैं समर्पण करता हूँ, क्योंकि आप अन्तर्यामी से प्रेरित होकर मैं सब कर्म करता हूँ।

यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत्।
यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम्॥

गीता-9/17

हे कुन्तीपुत्र अर्जुन! जो तुम करो, भक्षण करो, यज्ञ करो, अथवा दान करो और जप करो, वह सब परमेश्वर के ही अर्पण करो।

यहाँ यह ध्यान रखने की बात है कि जिस योगी ने अपने समस्त कार्य ईश्वर के समर्पण कर दिये हैं, उसका कोई काम अशुभ नहीं होगा। सब कार्य शुभ ही होंगे तथा फलों को ईश्वर-समर्पण कर देने के कारण उसके कर्म फलेच्छा परित्याग पूर्वक की होगे। कर्मों और उनके फलों को ईश्वर समर्पण कर देने के अर्थ कर्महीन बन जाना नहीं है।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्त्व कर्मणि॥

गीता-2/47

हे अर्जुन! कर्मों के अनुष्ठान में तुम्हें अधिकार है, कर्मों के फल में कदापि नहीं, अतः फलके अर्थ कर्मों का अनुष्ठान मत करो और कर्महीनता में भी तेरी आसक्ति न हो अर्थात् ईश्वर-समर्पण करके सदा निष्कामभाव से अपने कर्त्तव्यरूपी शुभ कर्मों को करते रहना चाहिए।

इसलिए अविद्या आदि क्लेशों को शिथिल करने के पश्चात् और चित्त को समाधि की प्राप्ति के योग्य बनाने हेतु क्रियायोग किया जाता है। 'तप' से शरीर, प्राण, इन्द्रिय और मन की अशुद्धि दूर होने पर वे स्वच्छ होकर क्लेशों के दूर करने और समाधि प्राप्ति में सहायक होते हैं। 'स्वाध्याय' से अन्तःकरण शुद्ध होकर समाहित होने की योग्यता प्राप्त कर लेता है। 'ईश्वरप्रणिधान' से समाधि सिद्ध होती है और क्लेशों की निवृत्ति होती है।

भाव यह है कि क्रियायोग द्वारा क्लेशों को दूर करना चाहिए। कलेशों के शिथिल होने पर अभ्यास-वैराग्य का सुगमता से संपादन हो सकेगा। अभ्यास-वैराग्य से क्रम प्राप्त सम्प्रज्ञात-समाधि की सबसे ऊंची अवस्था विवेक-ख्यातिरूप अग्नि से सूक्ष्म किये हुए होने पर परवैराग्य उत्पन्न होता है। परवैराग्य के संस्कारों की वृद्धि से चित्त का विवेकख्याति अधिकार भी समाप्त हो जाता है और असम्प्रज्ञात समाधि का लाभ प्राप्त होता है। इत्योम् शम्।।

– वैदिक भक्ति साधन आश्रम, आर्यनगर, रोहतक

www.thearyasamaj.org

सर्वगुण सम्पन्न श्री रामचन्द्र जी का जीवन-चरित्र

–राजवीर सिंह आर्य, बहादुरगढ़

गतांक से आगे

राम के उक्त वचन सुनने के पश्चात वाक्य का जानने वाला लक्ष्मण, हनुमान से बोला "हि विद्वान! हमने महात्मा सुग्रीव के विषय में जाना है, और उसी से मिलने की इच्छा रखते हुए, उस वानर पति को ढूंढ रहे हैं।" लक्ष्मण के वचन सुनकर हनुमान राम से बोला कि "आप यहां पम्पा के जंगलों जो बहुत दुर्गम हैं अपने छोटे भाई सहित किस प्रयोजन से आये हैं।" हनुमान के इस प्रकार वाक्य सुनने के पश्चात राम से प्रेरित हुआ लक्ष्मण इस प्रकार बोला "महा तेजस्वी दशरथ नामा एक धर्मवत्सल जो नियम पूर्वक चारों वर्णो का पालन करते थे। उन्होनें अनेक बहुत दक्षिणा वाले यज्ञादि कर्म किए थे, उन्हीं के ये बड़े पुत्र हैं जो राम नाम से जाने जाते हैं और मैं इन्ही का छोटा भाई लक्ष्मण हूँ। हे हनुमान! सूर्य के समान महातेजस्वी राम राज्य से निष्कासित होने पर अपनी भार्या सहित वन में सुशोभित थे। हमारी अनुपस्थिति में उनकी भार्या को कोई राक्षस हर ले गया जिसको हम निश्चित रूप से नहीं जानते। सो हम इसी कार्य के लिए सुग्रीव की सहायता चाहते हैं। जो राम सम्पूर्ण पृथ्वी को शरण देने योग्य थे, वे ही आज सुग्रीव की शरण चाहते हैं।" इस प्रकार सजल आंखो से कहे हुए लक्ष्मण के वचन सुनकर चतुर हनुमान यह वाक्य बोला "हे लक्ष्मण!। आप जैसे बुद्धिमान, इन्द्रियों का दमन करने वाले दोनों शूरवीर भाईयों के दर्शन करके हम बड़े भाग्यशाली हुए। यह सुग्रीव भी राज्य से भ्रष्ट हुआ अपने बड़े भाई बलि से अत्यन्त अपमानित और भयभीत होकर यहां वन में रह रहा है। वह वीर सुग्रीव सीता की खोज में हम लोगों सहित आपकी अवश्य ही सहायता करेंगे। फिर बोले कि हमें सुग्रीव के निकट चलना चाहिए।" इसके पश्चात वह महाबली दोनों भाईयों को सुग्रीव से मिलाने की ईच्छा से सुग्रीव के पास ले गया। सुग्रीव के पास जाकर हनुमान ने बताया कि "यह दोनों राघव सत्यप्रतिज्ञ व महापराक्रमी राम व लक्ष्मण हैं। यह दोनों जगत विख्यात महाराजा दशरथ के पुत्र हैं। इनकी भार्या को रावण हर ले गया इसीलिए यह आपकी शरण में आये हैं।" हनुमान के वचन सुनकर और उन दोनों भाईयों को देखकर वह सुग्रीव अत्यन्त प्रसन्न हुआ और कहा "यदि आप मुझसे मित्रता करना चाहते हैं तो लो मैंने अपनी भुजा फैलाई। अगर आप मेरे से मर्यादा में बंधना चाहते हैं तो अग्नि को साक्षी मानकर इसे ग्रहण करें।" इसके पश्चात राम ने सुग्रीव का हाथ पकड़ अति प्रसन्न हो एक दूसरे को देखते रहे और कहा कि अब हम आपस में सुख-दुःख में एक दूसरे के साथी हुए। इसके पश्चात् सुग्रीव ने राम से कहा कि "मुझे मेरे बड़े भाई बालि ने घर से निकाल दिया और मेरी स्त्री भी हर ली, मैं उसके बल से भयभीत हुआ यहां दुर्गम वन में वास कर रहा हूँ। लेकिन शांति को प्राप्त नहीं होता।" इस प्रकार अपना दुःख सुग्रीव ने भी राम को बताया और राम से अपने लिए सहायता मांगी। राम ने सुग्रीव की बातें सुनकर कहा कि "हे सुग्रीव मुझे उपकार का फल भले प्रकार विदित है आप बालि को मरा ही समझें, मेरे सूर्य समान तीक्ष्ण बाणों से बालि बच नहीं पायेगा।" इसके पश्चात सुग्रीव ने राम को सम्बोधित करते हुए कहा कि " हे राम! जैसा कि मेरे श्रेष्ठ मन्त्री हनुमान ने बताया कि आपसे पृथक हुई भार्या को रावण हर ले गया है, इसीलिए आप भी भार्या से पृथक हुए दुःख को छोड़ दें। मैं उसकी खोज कर उसे वापिस लाने में अवश्य आपकी सहायता करूंगा, निःसंदेह वह मैथिली ही थी जो उस राक्षस द्वारा हरी जाती हुई हमनें देखी थी। वह हा राम! हा लक्ष्मण! इस प्रकार भयंकर विलाप कर रही थी। हमें पर्वत पर बैठे देखकर उसने अपना दुपट्टा और आभूषण फेंक दिये जिनको हम सम्भाल कर रखे हुए हैं।"

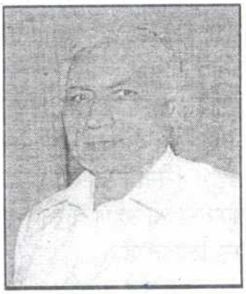

टिप्पणी– इस विषय में वाल्मिकी रामायण में दो श्लोक आते हैं जो इस प्रकार हैं–

1. तस्य पुत्रः शरणस्य सुग्रीव शरणं गतः।।

2. सर्वलोकस्य धर्मात्मा शरण्यः शरणं पुराः।
गुरुर्मे राघव सोऽयं सुग्रीव शरण गतः।।

कि. तृ. श्लोक 12.13

अर्थात् जिनके पिता भी शरण देने योग्य थे और जो मेरे गुरु समान धर्मात्मा राम इससे पूर्व सम्पूर्ण पृथ्वी को शरण देने योग्य थे, सो इस समय यह सुग्रीव की

www.thearyasamaj.org

शरण चाहते हैं। इससे भी आगे 14वें श्लोक में लिखते हैं कि सम्पूर्ण प्रजायें जिनके प्रसाद से प्रसन्न होती थी, आज वे ही सुग्रीव का प्रसाद चाहते हैं। अब आप ही विचारियें जिन्हें बहुत से धर्मात्मा बन्धु परमात्मा समझते व मानते हैं क्या इन श्लोको के निष्कर्ष निकालने पर व्यवहारिक बातें समाने नहीं आती हैं? कि कितना ही बड़ा बलशाली महापुरुष हो घोर विपत्ति आने पर अपने आपको बेबस मानता हैं और यही घटना श्रीराम के साथ हुई। लक्ष्मण आंखों में आंसू लाकर सुग्रीव से शरण मांगता है, सहायता की याचना करता है और साथ में यह भी कहता है कि " हे सुग्रीव! श्रीराम किसी के उपकार को भुलाते नहीं बल्कि उसे कई गुणा करके वापिस करते हैं।" वाल्मिकी रामायण के पश्चात और भी बहुत से ऋषि महर्षि हुए हैं जिन्होने श्रीराम को भगवान की उपाधि प्रदान कर दी। कालान्तर में कुछ लोगों ने इसे परमपिता परमात्मा मानकर इनके चरित्र की बजाए इनके चित्र की पूजा करनी शुरु कर दी जबकि हमने स्वाध्याय से जाना कि श्रीराम भी भगवान थे और परमात्मा का मना भी भगवान होता है। भगवान शब्द भग+मतुप प्रत्यय से मिलकर बनता है। जिसका अर्थ होता है भगवाला और भग के छः अर्थ होते हैं:-1. समस्त ऐश्वर्य, 2. धन,, 3. यश, 4. श्री, 5. ज्ञान व 6. वैराग्य। जिस व्यक्ति के पास यह छः गुण होते हैं उसे भगवान भी कहा जा सकता हैं क्योंकि यह छः गुण परमात्मा में भी हैं इसीलिए उसे भी भगवान कहा जाता हे। अब इसी प्रसंग में तुलसीदास जी क्या लिखते हैं उसे भी देखें:-

सुन कपि जियं मानसि जनि ऊना। तै मम प्रिय लछिमन ते दूना॥ समदरसी मोहि कह सब कोऊ। सेवक प्रिय अनन्यगति सोऊ॥

अर्थात् हे हनुमान तु मुझे लक्ष्मण से भी दो गुणा प्यारा है जबकि मुझे समदर्शी अर्थात् बराबर देखने वाला कहा जाता है। लेकिन सेवक की तो बात ही अलग है। वह तो परमगति को प्राप्त होता है। अब ऐसी-ऐसी चौपाईयों को पढ़ने के पश्चात क्या हम दूसरे सम्प्रदाय वालों के सामने कुछ बोल सकते हैं, इसी तरह की बातों से गुरुड्मवाद फैला है। जिसकी आड में आज लाखों नकली गुरु बनकर ऐशो-आराम की जिन्दगी जी रहे हैं। अरबो की सम्पतियों के स्वामी बने बैठे है। राज नेताओं का उन्हें संरक्षण प्राप्त होता है, कुछ की तो पोल-पट्टी खुल भी रही है लेकिन अंधश्रृद्धा तथा स्वार्थ रखने वाले तो अभी-भी इन बातों को साजिश बता रहे हैं। और आगे देखिए।

सो सीता कर खोज कराइहि। जहं जहं मरकट कोटि पठाइहि। एहि विधि सकल कथा समुझाई। लिये दुऔ जन पीठि चढ़ाई॥

अर्थात हे श्रीराम! वह सुग्रीव बहुत से यत्न करके सीता की खोज कर देगा और इसके पश्चात वह उन दोनों भाईयों को अपनी पीठ पर बैठाकर सुग्रीव के पास ले गया। आजकल रामलीलाओं का दौर शुरु हो रहा है इसके अन्दर भी इस तरह के दृश्य दिखाये जाते हैं कि राम और लक्ष्मण को हनुमान कंधे पर बैठाकर स्टेज पर लाता है। अब आप विचारिये जो ब्रह्मचारी, तपस्वी और नवयुवक हो और पिछले लगभग 13 साल से वनों में ही रह रहे हों उनको किसी की पीठ की क्या आवश्यकता है? इसका उतर दिया जाता है कि यह तो भक्ति और श्रद्धा की बात थी, यह तो श्रीराम और लक्ष्मण के सत्कार की बात थी जबकि हमारा उत्तर अपनी प्राचीन मर्यादाओं के अनुसार यह है कि किसी भी अतिथि का इस प्रकार के सत्कार का उल्लेख नहीं मिलता है। हाँ वृद्ध व बीमार व्यक्ति के साथ ऐसा व्यवहार किया जाना उचित है। जबकि वाल्मिकी रामायण में स्पष्ट लिखा है कि इस प्रकार मधुर वाणी द्वारा भाषण करते हुए हनुमान बोले कि आइए सुग्रीव के निकट चलते है तदन्तर वह महाबली पवनसुत हनुमान उन दोनों राघव वीरों को साथ लेकर वानरराज सुग्रीव समीप गया, देखिए कि.का.सर्ग-3, श्लोक-22, 23।

सम्पर्क करें

पारिवारिक अनुचित व्यवहारों से उत्पन्न मानसिक उद्विग्नता, वैमनस्य, ईर्ष्याद्वेष आदि में मनोवैज्ञानिक समाधान, वेद, दर्शन, उपनिषद गीता आदि साहित्य पर सुबोध व युक्ति पूर्ण प्रवचन वैदिक-यज्ञ तथा प्रभावोत्पादक ध्यान-योग साधना शिविरों हेतु सम्पर्क करें :

राजहंस मैत्रेय, मो. 9813754084

www.thearyasamaj.org

क्रान्तिकारी संन्यासी का राष्ट्रभक्त आर्यसमाज

- कन्हैयालाल आर्य

आज से 138 वर्ष पूर्व (सन् 1875 ई.) महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज की स्थापना की थी। आर्य समाज की स्थापना इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना है। आर्यसमाज के संस्थापक दयानन्द सरस्वती इस देश में 19वीं शताब्दी में यदि न आते तो न ही देश इतनी शीघ्र स्वतन्त्र होता और न ही समाज से इतनी शीघ्रता से कुरीतियों (सामाजिक एवं धार्मिक) का उन्मूलन होता। कोई माने या न माने किन्तु आज भारत में धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक व शैक्षणिक तौर पर जो चहुँमुखी उन्नति दृष्टिगोचर हो रही है उसमें बहुत बड़ा भाग आर्य समाज का है। देश को स्वतन्त्र कराने के लिए क्रान्तिकारी संन्यासी स्वामी दयानन्द सरस्वती ने जो भारतीयों के हृदयों में एक ऐसी ज्वाला का संचार किया जिसका अनुभव अंग्रेजी सरकार को इतनी अच्छी प्रकार हो गया था कि अंग्रेजी सरकार ने लन्दन को जो रिपोर्ट भेजी उसमें स्पष्ट लिखा था कि दयानन्द नाम का संन्यासी हमारी सरकार के विरूद्ध नवयुवकों के हृदयों में विद्रोह की अग्नि को भड़का रहा है, इस पर कड़ी निगाह रखने की आवश्यकता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती 'इदन्न मम' की भावना लेकर आये थे। उन्होंने कोई नया मत न चलाकर पुरातन वैदिक संस्कृति को हमारे सम्मुख रखा। जो लोग महर्षि दयानन्द को गालियाँ देते थे महर्षि दयानन्द उनमें भी प्यार बाँटा करते थे। एक बार कुछ लोगों ने उन्हें बताया कि लोग नकली दयानन्द बनाकर उनके गले में जूतों का हार पहना रहे हैं, तब महर्षि ने कहा था कि नकली दयानन्द बनने वालों की यही हालत ही हुआ करती है। अतः हमें आज संकल्प करना होगा कि हम सच्चे दयानन्दी बनें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जब अपने पूज्य गुरु स्वामी विरजानन्द से शिक्षा ग्रहण कर ली तब वे अपने गुरु को दक्षिणा देने के लिए लौंग लेकर गये क्योंकि शिष्य जानता था कि गुरु को कौन सी वस्तु अधिक अच्छी लगती है। परन्तु गुरु विरजानन्द ने अपने प्रिय शिष्य स्वामी दयानन्द से कहा था कि यदि तुम वास्तव में मुझे गुरु दक्षिणा देना चाहते हो तो आज से संकल्प करो कि वेदों का प्रचार करूँगा। वेद लुप्त प्रायः हो रहे हैं, उसके प्रचार-प्रसार में अपने जीवन को लगा दोगे, तो मेरी शिक्षा सार्थक हो जायेगी। उसी दिन देव दयानन्द ने यह निर्णय ले लिया कि वे वेदों के सच्चे स्वरूप को समाज के सम्मुख रखेंगे। संसार के इतिहास में ऐसे गुरु और शिष्य का उदाहरण मिलना कठिन है। गुरु के द्वारा ऐसी दक्षिणा माँगना और शिष्य के द्वारा इसी हेतु अपना जीवन अर्पित कर देना, ऐसा अनूठा उदाहरण विश्व के किसी भी इतिहास में सम्भवतः नहीं मिलेगा।

पौराणिक तथा विदेशी भ्रमित लोगों ने ये अर्नगल बातें प्रचारित कर रखीं थी कि वेद केवल गडरियों के गीत हैं। परन्तु स्वामी दयानन्द जी ने यह सिद्ध कर दिया कि वेद सब विद्याओं का पुस्तक हैं और वेद का पढ़ाना और सुनना, सुनाना सब आर्यो का धर्म ही नहीं बल्कि परमधर्म बताया जबकि भारत के रूढ़िवादी समाज में उन दिनों वेदों का पढ़ना तो दूर, सुनना सुनाना भी अपराध माना जाता था और प्रत्येक प्रकार की शिक्षा का मानव मात्र को अधिकार देना, इससे बढ़कर धार्मिक शिक्षा मानव समाज के लिए और क्या देन हो सकती है?

कुमारिल भटट् और जगत गुरु शंकाराचार्य वेदों के प्रकांड पंडित थे। उनकी योग्यता एवं वेद के प्रति श्रद्धा को शत-शत नमन। परन्तु उन्होंने भी 'स्त्री शूद्रो न-अधीयताम्' अर्थात् स्त्री और शूद्र को वेद पढ़ने का अधिकार न देकर वेदों की भावना को संकुचित कर दिया था। पौराणिकों ने तो यहाँ तक कह डाला था कि यदि शूद्र और स्त्रियाँ वेदों को सुन लें तो उनके कानों में सीसा घोल कर डाल दिया जाये, सुना दें तो उनकी जीभ काट ली जाये, परन्तु वाह रे मेरे प्यारे दयानन्द! वेदों के रखवाले दयानन्द। तुझे कोटि-कोटि नमन। तूने न केवल स्त्रियों और शूद्रों को बल्कि सम्पूर्ण मानव जाति को वेद पढ़ने, पढ़ाने, सुनने, सुनाने का अधिकार दिलाकर मानव जाति पर वह महान उपकार किया है जिसके लिए सम्पूर्ण मानव जाति उनके इस परोपकर के लिए कृतज्ञ रहेगी।

आर्यसमाज एक ऐसी संस्था है जो हमारे नवयुवकों

www.thearyasamaj.org

को न केवल देशभक्ति की शिक्षा देती है बल्कि उन्हें माता, पिता, गुरुजनों का मान करना, पाखंडो के विरुद्ध जागृत करने का भी काम करती है। नई पीढ़ी यदि इस पवित्र आर्यसमाज रूपी संगठन से नहीं जुड़ेगी तो वह बुरी संस्थाओं (पाखण्ड का प्रचार करने वाली) से जुड़ जायेगी तो उससे समाज का पतन निश्चित है। हम अच्छे लोग अच्छाई का प्रचार बहुत कम कर रहे हैं और बुरे लोग बुराई का प्रचार करने में दिन रात जुट हैं। यदि हम अच्छे लोगों ने अच्छाई के प्रचार प्रसार में अपने जीवन को नहीं लगाया तो हमें इतिहास कभी भी क्षमा नहीं करेगा।

आर्य किसी जाति विशेष का नाम नहीं है बल्कि एक संस्कृति-सभ्यता का नाम है। आर्य वह है जो जीवन में पुरुषार्थ भी करता है और शान्त भी रहता है। वह दुख में घबराता नहीं है और सुख में इतराता नहीं है। यदि हमें अपने जीवन में सुखी बनना है तो हमें सात्विक यज्ञ करने होंगे, सत्साहित्य का स्वाध्याय करना होगा। यह जो हम दैनिक यज्ञ करते हैं उसके पीछे हमारी त्याग एवं परमार्थ की भावना होनी चाहिए। यदि यज्ञ दिखावे के लिए हो रहे हैं, स्वार्थ की भावना से हो रहे हैं तो इससे हमारे शरीर को लाभ तो अवश्य होगा परन्तु हमारी आत्मा को सन्तोष तो निःस्वार्थ के कार्यों से ही मिलेगा। यही पवित्र भावना महर्षि दयानन्द सरस्वती अपने संगठन आर्य समाज के माध्यम से विश्व को देना चाहते थे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने एक अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना की। सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ने वाला व्यक्ति किसी पाखण्ड में नहीं फँस सकता। 'सत्यार्थ प्रकाश' बन्द आँखों को खोल देता है। सत्य का प्रचार करने से ईश्वर प्रसन्न होते हैं। महर्षि ने 'सत्यार्थ प्रकाश' में सत्य अर्थों का प्रकाश किया है। महर्षि ने आर्यसमाज के 10 नियमों में पहले 5 नियमों में सत्य की बात की है। इस जाति पर महर्षि दयानन्द के इतने उपकार हैं कि भुलाये नहीं जा सकते। स्त्री शिक्षा, विधवा विवाह, अछूत-उद्धार, शुद्धि प्रचार, स्वभाषा हिन्दी प्रचार एवं स्वदेशी का मूल मन्त्र सबसे पहले देना ऐसे कार्य थे जिन्हें सामाजिक क्रान्ति कहा जा सकता है और समाज एवं राष्ट्र आज भी उसके अनूकूल चलने का प्रयास कर रहा है। 'सत्यार्थ प्रकाश' पढ़ कर हमारी सारी भ्रान्तियों का समाधान हो जाता है।

युग पुरुष महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज नामक पवित्र एवं क्रान्तिकारी संगठन स्थापित कर एक महान् कार्य किया है। आज आर्यसमाज पूरे विश्व के लिए एक प्रकाश स्तम्भ का कार्य कर रहा है। अपने जन्म से लेकर आज तक इस पवित्र संस्था ने कुरीतियों के विरुद्ध जो संघर्ष किया है उसके लिए विश्व उनका सदा ऋणी रहेगा। आर्यसमाज एक बहुत बड़ा शक्तिशाली संगठन है। यह संगठन जब भी किसी कार्य को अपने हाथ में ले लेता है तो उसे पूरा करके ही रहता है। जब कॉमन वैल्थ खेलों में गोमांस परोसने सम्बन्धी सरकारी दुष्कत्य का विरोध करने के लिए तत्कालीन आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा एवं गोशाला संघ हरियाणा के प्रधान, तपोमूर्ति आचार्य बलदेव जी की एक हुंकार ने केन्द्र सरकार के होश उड़ा दिये और केन्द्र सरकार को इस दुष्कृत्य को वापिस लेना पड़ा। आर्यसमाज के द्वारा चलाये गये इस आन्दोलन को पूरे धार्मिक जगत से पूरा सहयोग मिला और अन्ततः सरकार को झुकना पड़ा। आर्यसमाज जब भी सर्वात्मना किसी भी अत्याचार के विरुद्ध उठाता है तो उसको समाप्त करके ही विश्राम करता है। सरकारें तो झुका करती हैं, झुकाने वाला होना चाहिए। जब भी आर्यसमाज ने किसी भी कुरीति के विरुद्ध मुँह खोला है उसे समाज ने न केवल सहर्ष स्वीकृति दी है बल्कि उस मन्तव्य को अपने जीवन का अंग बना कर अपना लिया है।

आज संसार में भटकाने वाले बहुत है, मार्ग दर्शक कम। तथाकथित सन्तों की बाढ़ आई हुई है लेकिन वास्तविक सन्त बहुत कम दिखाई देते हैं। आज दुनिया को महर्षि दयानन्द जैसे निर्मोही एवं अपना जीवन समाज के लिए आहूत करने वाले सन्तों की आवश्यकता है। एक ओर तो विज्ञान अपनी चरम सीमा पर है दूसरी ओर कुछ तथाकथित सन्त समाज को गुमराह करके लूट रहे हैं। समाज को इस लूट से बचाने के लिए महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्यसमाज को सबल बनाने की आवश्यकता है। आर्य समाज सबल होगा तो पाखण्ड और भ्रम संसार से दूर हो जायेंगे और तथाकथित सन्तों एवं पाखण्डियों की दुकानें नहीं चलेगी। समाज को स्वच्छ जीवन जीने की प्रेरणा मिलेगी, समाज वेदों की ओर लौटेगा तथा उन्नत होगा। प्रभु पाने का मार्ग सुलभ होगा। इसीलिए आर्यसमाज रूपी संगठन को सबल बनाना अनिवार्य है ताकि विश्व समाज भ्रम विहीन बनकर अपने जीवन को सार्थक कर सके।

4/45, शिवाजी नगर, गुड़गांव, हरयिाणा

www.thearyasamaj.org

गले के रोगों का स्थाई उपचार

हम जो भी आहार लेते हैं वह हमारे गले के अन्दर से गुजरती आहार नली से होता हुआ हमारे पेट में पहुंचता है। हमारे स्वर यंत्र की नलिकायें भी गले से होकर गुजरती हैं। एक तरह से गला हमारे शरीर का वह मुख्य अंग है, जिसके द्वारा हमारे शरीर की कई मुख गतिविधियों का संचालन होता हैं। अगर गले में कोई भी बीमारियां विकार उत्पन्न हो जाये तो हमारा जीना मुहाल हो जाया करता है।

अक्सर लोगों के गले में सूजन आ जाया करती है, स्वरयंत्र में खराबी आ जाया करती है और गले में दर्द की अनुभूति होने लगती है। गले की इनसमस्याओं से पीड़ित व्यक्ति को तेज बुखर रहने लगता है, कब्ज की शिकायत पैदा हो जाती है, पेशाब गाढ़ा व पीला आने लगता है और उसे पीठ दर्द और सिरदर्द की समस्या रहने लगती है। इसके अलावा सारे शरीर में दर्द रहने के साथ पीड़ित व्यक्ति के गले की आवाज बैठ जाती है, जीभ मैली और सांस दुर्गन्धिमय हो जाती है, गले का दर्द फैलता-फैलता कानों तक पहुंच जाता है और खाना खाते वक्त दर्द में बढ़ोतरी हो जाया करती है। दोनों ग्रैवोंयिक गृन्थियों (टांसिल) में फैलने के बाद सूजन आ जाया करती है। गले के रोग इस प्रकार है-

टांसिल- गले के अंदर श्लैष्मिक कला में अक्सर सूजन आ जाया करती है। यह स्थिति तब पैदा होती है जब गले के प्रवेश द्वार के आसपास विषैले तत्वों को जमावड़ा हो जाया करता है। विषैले जीवाणुओं की गले में उपस्थिति की वजह से ही गले में सूजन आ जाया करती है। टांसिल रोग हो जाने पर गले के प्रवेश द्वार के दोनों ओर मांस की गाठों की उत्पत्ति हो जाया करती है। इन्हें ही टांसिल कहा जाता है। इस रोग के रोगी जब आलू, चावल, मैदा, चाकलेट, चीनी, मिठाई ज्यादा खट्‌टी व ज्यादा ठंडी खाद्य वस्तुओं का सेवन करे हैं तो उनके टांसिलों में और ज्यादा सूजन आ जाया करती है। इस वजह से पीड़ित व्यक्ति को कब्ज की शिकायत रहने लगती है। ठंड की वजह से भी टांसिल बढ़ जाया करते हैं। इस रोग में पानी पीने में थूक सटकने में भी परेशानी होती है और गले में तेज दर्द होने लगता है। रोगी को सिर दर्द और बुखार की शिकायत रहने लगती है। रोगी को बोलने तक की शिकायत रहने लगती है। गले में खराश रहने के साथ-साथ खांसी भी उठती है।

डिप्थीरिया:- डिप्थीरिया रोग बच्चों को ज्यादा होता है। इस रोग का इलाज करने में जरा सी भी देरी नहीं करनी चाहिए। इस रोग की उत्पत्ति गले और नाक में होती है। ठंडे और पहाड़ी इलाकों में डिप्थीरिया रोग, बहुतायत में होता है। यह रोग संक्रामक रोग है। जब बच्चे सर्दी, गले की बीमारी तीव्र खांसी, खसरा रोग से घिरते हैं तब इन रोगों के बाद उन्हें डिप्थीरिया रोग होने की आशंका पैदा हो जाया करती है। जब गले की झिल्ली में जीवाणु आक्रमण करते हैं तब गले में यह रोग होता है। छींकने से, थूकने से, खांसने से इस रोग के जीवाणु रोगी के मुंह से निकल कर दूसरे लोगों को लग जाया करता है। बासी भोजन करने से, प्रदूषित वातावरण में रहने से और ज्यादा ठंड वाली जगह पर रहने से भी लोग इस रोग की चपेट में आ जाया करते हैं।

स्वर भंग-स्वर भंग की समस्या पैदा हो जाने पर रोगी की आवाज कर्कश हो जाया करती है वाणी में अस्पष्टता आ जाती है, ऐसा लगने लगता है जैसे रोगी के गले में कोई चीज फंसी हुई हो। रोगी के गले का कौआ बढ़ जाता है। रोगी के गले में दानों की उत्पत्ति हो जाती है, सिफलिस रोग की वजह से श्लेष्मिक व्रण आदि की उत्पत्ति हो जाती है। रोगी को गले में खुजली, गुदगुदी, अतिशय स्राव, खुश्की, खांसी, खरखराहर की शिकायत रहने लगती है। रोगी को सांस लेने में और कुछ भी निगलने में परेशानी का अनुभव होता है। जब रोगी को खांसी उठती है तो ऐसा प्रतीत होता है जैसे उसे फेफड़ो से सम्बन्धित कोई रोग हो पर ऐसा होता नहीं है।

गले में उत्पन्न व्रण- कई बार गले की श्लेष्मा कला और गले की त्वचा में किसी घाव की उत्पत्ति हो जाया करती है। इस अवस्था में रोगी को असहय दु:ख का सामना करना पड़ता है।

स्वर यंत्र में आयी सूजन-ज्यादा बोलने वाले,

www.thearyasamaj.org

गायक, प्रवक्ता, जोर से बोलने वाले नेता, अभिनेता आदि लोगों में स्वर यंत्र की सूजन की समस्या ज्यादा पायी जाती है।

गले से संबंधित सभी रोगों की उत्पत्ति का कारण–बरसात में भीग जाने से, सर्दी लग जाने से प्रदूषित वातावरण में रहने की वजह से, मौसम बदलने की वजह से, नमी वाले वातावरण में रहने की वजह से, गठिया, आमवात, संधिवात, कुकर खांसी, ज्वर, खसरा, छोटी माता, स्कारलेट, हिपेटाइटिस, राज्यक्षमा, पायरिया, डिप्थीरिया, सिफलिस, दांतों के सड़ने की वजह से भी गले में रोग प्रकट हो जाते हैं। बैक्टीरिया जन्य टॉक्सिन्न की वजह से, मुंह को खोलकर सांस लेने की वजह से, साइनस रोग की वजह से, नासिक अवरोध की वजह से, जुकाम की अधिकता से, ज्यादा बोलने से, ध्रमपान करने से, शराब पीने से, जहरीली भाप सांस के साथ अंदर जाने से, तले-भुने खाद्य पदार्थ ज्यादा खाने से, ठंडी खाद्य वस्तुएं ज्यादा खाने से, तेज स्वर में बोलने से, अलग-अलग आवाज गले से निकालने से, कब्ज रहने की वजह से गले में टांसिल और स्वर यंत्र में खरासी आदि के रोग होते हैं।

जडी-बूटियों से उपचार

- ❑ डिप्थीरिया के रोगी को शुद्ध शहद में फूला हुआ सुहागा मिलाकर थोड़ा-थोड़ा चांटना चाहिए।
- ❑ रोगी के गले में चिकना पदार्थ लगना चाहिए और रोगी को गर्म पानी से कुल्ले करने चाहिए।
- ❑ गरम पानी में नमक मिलाकर गरारे करने चाहिए।
- ❑ तुलसी के बीजों को पीसकर शहद में मिला लें। इस मिश्रण को चाटने से गले में आयी सूजन कम होती है।
- ❑ काली मिर्च, कुलथी का काढ़ा बना लें। इस काढ़े में शहद मिला कर इसका सेवन करना लाभदायक रहता है।
- ❑ टांसिल हो जाने पर अरण्डी के पत्ते को आंच दिखाकर उस पर शहद लगा लें। इसे दोनों तरफ गालों पर चिपकाने के बाद पट्टी बांध लें। ऐसा करने से फायदा होगा।
- ❑ पानी में तुलसी के पांच-छः पत्तों को खूब खौला लें। अब इस पानी में थोड़ा सा शहद मिलाकर कुल्ला करने से टांसिल रोग में फायदा होता है।
- ❑ अगर गला बैठ जाये तो खाने के पश्चात् काली मिर्च का चूर्ण शहद में मिलाकर चाटने से फायदा होता है।
- ❑ मिश्री या मुलेहठी या लौंग मुंह में रखकर चूसने से लैरिजाइसिटस रोग में फायदा पहुँचता है।
- ❑ स्वर भंग की समस्या हो तो काली मिर्च और मिश्री को मुंह में डालकर चूसना चाहिए।
- ❑ पके हुए बढ़िया आम को आग में दबाकर भून लें। ठंडा होने पर धीरे-धीरे चूसने से सूखी खांसी मिटती है।
- ❑ हरड़ का चूर्ण 2-4 ग्राम फांक कर ऊपर से गन्ने का रस पीने से गलगंड रोग में लाभ होता है।
- ❑ गन्ने को भूभल में सैंककर चूसने से स्वरभंग में लाभ होता है।
- ❑ प्याज को आग में दबाकर भरता बना लें। 250 मिली ग्राम भुना सुहागा खिलाकर रोगी को ऊपर से भुरता खिला दें। ऐसा करने से रोगी की आवाज खुल जायेगी।
- ❑ सहजन की जड़ के क्वाथ से कुल्ला करने पर स्वर भंग मिटता है।
- ❑ शतावर, खरैटी और शक्कर को मधु में मिलाकर चाटने से स्वर भंग मिटाता है।
- ❑ गले के रोगों से छुटकारा पाने के लिए अंगूर के रस से गंडूष करना बहुत अच्छा रहता है।
- ❑ दाख के 10 मिली लीटर रस में हरड़ का 1 ग्राम चूर्ण मिलाकर सुबह-शाम नियमपूर्वक पीने से गलगुन्थि मिटती है।
- ❑ गलगंड रोग से छुटकारा पाने के लिए बेल के पत्तों को पीसकर टिकिया बनाकर गले पर बांधनी चाहिए।
- ❑ भांगरा के पत्तों को पीसकर टिकिया बनाकर घी में पकाकर कंठमाला की गांठों पर बांधने से शीघ्र लाभ होता है।
- ❑ भारंगी की जड़ को चावल की धोवन के साथ पीसकर लेप करने से गलगंड मिटता है।
- ❑ धनिये के 5-10 ग्राम बीजों को दिन में दो-तीन बार चबाने से गले की पीड़ा मिटती है।
- ❑ जामुन के रस के 10-15 मिली लीटर की मात्रा

www.thearyasamaj.org

में नियमित सेवन से कंठरोग दूर होते हैं।

- कचनार की 10-20 ग्राम छाल को 400 मिली लीटर पानी में औंटाकर चतुर्थांश बचे क्वाथ को पीने से गड़माला रोग मिटता है।
- गले की सूजन में कंटकारी के फलों का 10-20 ग्राम स्वरस पीने से लाभ होता है।
- सूखे करेले को सिरके में पीसकर गरम करके लंप करने से कंठ की सूजन मिटती है।
- फ्लाश की जड़ को घिसकर कान के नीचे लेप करने से गलगंड मिटता है।
- गले की हलकी सूजन पर काली राई के तेल मालिश करने से फायदा होता है।
- हुरहुल मूल और लहसुन दोनों को पीसकर टिकिया बनाकर गले पर बांधने से गलगंड फूट जाता है और बहकर साफ हो जाता है। मगर इसकी वेदना बहुत ज्यादा होती है।

अनुभूत उपचार टांसिल व थायराइड का- त्रिकुट चूर्ण 50 ग्राम, बहेड़ा चूर्ण 20 ग्राम, प्रवाल पिष्टी 10 ग्राम लेकर सबका चूर्ण बनाकर रख लें। बड़ी उम्र के व्यक्ति एक-एक ग्राम तथा छोटी आयु के रोगी आधा-आधा ग्राम की मात्रा में चूर्ण लेकर प्रातः सायं खाली पेट शहद के साथ सेवन करें। निरन्तर सेवन करने से थायराइड के रोग में विशेष लाभ होता है तथा बच्चों के टांसिल्स की समस्या भी दूर होती है।

आहार- गले के रोगों में रोगी को टमाटर-पालक, लौकी, टिण्डा, तोरई आदि सब्जियों का सूप देना चाहिए। चावल का गरम-गरम माड पीने से रोगी को खूब फायदा पहुँचता है। रोगी को चोकर वाले आटे की रोटियां ओर उबली हुई सब्जी खानी चाहिए। संतरे के रस में इतनी ज्यादा क्षमता होती है कि इसके सेवन से गले के सारे संक्रामक कीटाणु नष्ट हो जाते हैं इसलिए संतरे का जूस रोगी को अवश्य पीना चाहिए। रोगी को शीतल पेय नहीं पीने चाहिए। तले-भुने खाद्य पदार्थ खाकर पानी नहीं पीना चाहिए। ज्यादा खट्टे खाद्य पदार्थ नहीं खाने चाहिए। चाय कॉफी का सेवन नहीं करना चाहिए। जंक फूड व फास्ट फूड नहीं खाने चाहिए। तम्बाकू मैदा और बेसन से बने पदार्थो का सेवन नहीं करना चाहिए। चॉकलेट, बिस्कुट, ब्रेड नहीं खाने चाहिए। फल और सब्जियों का ज्यादा से ज्यादा सेवन करना चाहिए। अंकुरित अनाज और सलाद खानी चाहिए।

योग- प्रतिदिन योगासन, ध्यान व प्राणायाम अवश्य करना चाहिए। ऐसा करने से शरीर तो स्वस्थ रहता ही है रोगों से भी शरीर का बचाव होता है।

आप आत्मशुद्धि आश्रम को निम्न प्रकार से सहयोग दे सकते हैं-

1. आत्मशुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य व आजीवन सदस्य बनकर, वार्षिक सदस्य स्वयं बनकर व अपने हितैषियों को बनाकर, विज्ञापन देकर अपने किसी हितैषी की स्मृति में उनका जीवनचरित्र छपवाकर।
2. बाल कल्याण सदन के छात्रों को पुस्तकें, कॉपी, वस्त्र देकर और धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय आदि सेवाकार्यों में आर्थिक सहयोग देकर एवं भोजन के लिए आटा, दाल, चावल आदि खाद्य सामग्री भेजकर। गौशाला में गौदान एवं खल-चूरी, दाना, भूसा आदि भेज सकते हैं।
3. बाल कल्याण सदन के छात्रों में से किसी एक को गोद लेकर उसका सम्पूर्ण व्यय 1000/- रुपये मासिक के हिसाब से साल भर का 12000/- रुपये छात्रवृत्ति देकर आप सहयोग कर सकते हैं।
4. आश्रम में प्रातराश, मध्याह्न का भोजन, मध्याह्नोपरान्त जलपान एवं रात्रिकाल के भोजन का व्यय लगभग 2000/- रुपये है। हमारी हार्दिक इच्छा है कि 365 यजमान बनें। एक दिन का भोजन देकर भोजन समस्या का समाधान कर सकते हैं।

कमरों के नाम लिखवाने के इच्छुक सम्पर्क करें : आपके प्रिय आत्मशुद्धि आश्रम में 1 कमरा 31000/- 1 कमरा 100000/-, आप सभी दानी महानुभावों से निवेदन है कि अपना अथवा अपने किसी स्वजन की स्मृति मध्य उनके नाम का पत्थर लगवाकर अपने स्वजन का नाम उज्ज्वल कर पुण्य एवं यश के भागी बनें।

धन्यवाद! –व्यवस्थापक आश्रमसम्पर्क सूत्र : 01276-230195, 9416054195

www.thearyasamaj.org

स्वस्थ बालों का यौगिक एवम् प्राकृतिक निदान

–डॉ. विपुल भट्ट

जिस तरह छोटे और तरीके से कटे बालों में पुरुष बेहद आकर्षण लगते हैं, उसी तरह से घने काले बालों की वजह से नारी की सुन्दरता और ज्यादा निखर उठती है। एक तरह से हम कह सकते हैं कि हमारे व्यक्तित्व निर्माण में बालों का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। हमारे बालों का निर्माण जिस प्रोटीन के द्वारा होता है उसका नाम 'कैरोटीन' है। कैरोटीन की उत्पत्ति खोपड़ी में होती है। हमारी खोपड़ी की सतह के नीचे फोलिकन नाम की जैली होती है। इसी जैली से बालों की उत्पत्ति होती है। बालों की जड़ों में जो कोशिकायें होती है, वे सक्रिय होती हैं। इसी स्थान पर तैलीय ग्रन्थियां भी होती है, जिनकी वजह से बालों में निखार और चमकीलापन आता है। बालों के नीचे वाली तीन परतों में जब किसी तरह की खराबी पैदा होती है, तब सिर के बाल झड़ने शुरु हो जाया करते हैं। इसके बाद धीरे-धीरे सिर गंजा होता चला जाता है। हर रोज औसतन 50 से 100 बाल झड़ा करते हैं जब ज्यादा मात्रा में तेजी से सिर के बाल झड़ने लगते हैं तो यह स्थिति सिर के बालों के विभिन्न रोगों की तरफ इशारा करती है।

सिर के बालों के रोम कूपों की संरचना को तीन भागों में बांटा जा सकता है। कार्टेक्स का हिस्सा बालों को आकार, प्रकार, मात्रा और विस्तार देता है। इसी जगह पर बालों को काला, भूरा, लाल रंग देने वाला रंजकजन्य पिगमेंट होता है। उम्र बढ़ने के साथ-साथ इस पिगमेंट में भी कमी आने लगती है। जिससे बाल सफेद होने शुरु हो जाया करते हैं। असमय बाल झड़ना व सफेद होना वंशानुगत भी हो सकता है क्योंकि बालों के झड़ने व सफेद होने वाले जीन्स खानदानी तौर पर विरासत में मिला करते हैं। इस तरह की वजह से जब बाल झड़ते हैं, गंजापन होता है व बाल सफेद होते हैं तो इस अवस्था में किसी भी प्रकार का सुधार लाना असम्भव होता है।

लक्षण- सिर के थोड़े बहुत बाल तो लगातार झड़ते ही रहते हैं, पर अगर बाल गुच्छों के रूप में झड़ने लगे तो बालों के प्रति पूरी तरह से सजग हो जाना चाहिए।

कारण

- ❑ आहार में प्रोटीन, विटामिन ए, विटामिन बी-5, विटामिन ए, ई, बी, सिलिकन, लोहा, आयोडीन, क्लोरीन, मैग्नीशियम, आदि तत्वों की वजह से सिर के बाल झड़ने लगते हैं।
- ❑ बालों को हेयर ड्रेसर से सीधा करवाने से, मशीनों के द्वारा घुंघराले करवाने से, बालों को रंगवाने से बालों को क्षति पहुँचती है।
- ❑ अव्यवस्थित हार्मोन के स्रोव से, रजो निवृत्ति के समय एस्ट्रोजन और प्रोजेस्टरॉन में कमी से बालों को झड़ना व बालों के अन्य रोग हो जाते हैं।

जड़ी बूटियों के द्वारा उपचार

- ❑ आम के गुठलियों के तेल को बालों में लगाने से सफेद बाल काले हो जाते हैं। तथा काले बाल जल्दी सफेद नहीं होते हैं। बाल झड़ना और रूसी की समस्याओं में भी इससे लाभ होता है।

आश्रम द्वारा प्रकाशित
महत्त्वपूर्ण साहित्य अवश्य पढ़ें

यज्ञ समुच्चय	मूल्य : 50 रु.
वैदिक सूक्तियों पर दृष्टान्त	मूल्य : 25 रु.
स्वस्थ जीवन रहस्य	मूल्य : 20 रु.
फल-सब्जियों द्वारा रोग नष्ट	मूल्य : 20 रु.
आत्मशुद्धि के सरल उपाय	मूल्य : 15 रु.
विद्यार्थियों के लाभ की बातें	मूल्य : 15 रु.
वृहद् जन्मदिवस पद्धति	मूल्य : 20 रु.
चाणक्य-दर्पण	मूल्य : 25 रु.
कल्याण-पथ	मूल्य : 20 रु.
प्राणायाम-विधि	मूल्य : 10 रु.
स्वादिष्ट प्रयोग चतुष्टय	मूल्य : 15 रु.

प्राप्ति स्थान : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जि. झज्जर (हरियाणा) पिन-124507
दूरभाष : 01276-230195 चलभाष : 09416054195

www.thearyasamaj.org

आहार

- पत्तागोभी, प्याज, पालक, खीरा, लौकी, गाजर, चुकन्दर का सेवन करें। इन सब में सिलिकन, सिसोटिन, क्लोरिन, कैल्शियम सिस्टिन, लोहा, आयोडीन नमक प्रोटीन होते हैं, जो बालों के उचित पोषण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- नाश्ते में सेव, पपीता, अमरूद, नाशपाती, केला, संतरा, मौसमी आदि लें।
- दही, सोयाबीन, नींबू, छाछ, आंवला व शहद का सेवन लाभ पहुँचाता है।
- चोकरदार मोटे आटे की रोटियां खायें।
- आंवला, नारियल, अदरक, धनिया, लहसुन, को पीसकर चटनी का सेवन करें।

अपथ्य

- चटपटे व तले-भुने खाद्य पदार्थ न खायें।
- चाय, कॉफी, चीनी आदि का सेवन कम करें।
- बेसन व मैदा से बने खाद्य पदार्थ न खायें।
- चॉकलेट, टॉफी न खायें।
- मिर्च का सेवन कम करें।
- बाजार के खाद्य पदार्थ न खायें।

आसन तथा व्यायाम

उंगलियों के तेज दबाव व सिर के खाल की मालिश करनी चाहिए। एक तरह से यह सिर के बालों की व्यायाम क्रिया है। बालों में सूखी या तेल की मालिश करना भी व्यायाम क्रिया ही है। ऐसा करने से बालों की निष्क्रियता, शुष्कता और खराबी मिटती है। खून का दौरा होने से बालों का सही पोषण होता है। हलासन, शीर्षासन, सर्वांगासन व मत्स्यासन करने से सिर की ओर स्वाभाविक रूप से रक्त का दौरा तीव्र होता है, जिससे बालों को भरपूर पोषण मिलता है और बाल झड़ने बंद हो जाते हैं। इसके अलावा पश्चिमोत्तानासन, चक्की चालन आसन, जानुशीर्षासन, कूर्मासन, उत्तानपाद आसन, उस्ट्रासन, अर्धमत्स्येन्द्रासन, चक्रासन, धनुरासन, पक्षी आसन, भुजंगासन व शलभासन, कपालभाति, अनुलोम-विलोम एवं दीर्घ श्वसन प्राणायाम और ध्यान का प्रयोग करना चाहिए। ऐसा करने से तनावजन्य बालों की बीमारियां तो मिट्टी ही है, साथ ही तन और मन भी शुद्ध होता है।

सतत अभ्यास से ही व्यक्तित्व का निर्माण होता है: दुग्धाहारी

स्थानीय आत्मशुद्धि आश्रम में श्रद्धालुओं को प्रवचन देते हुए स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी ने कहा कि लगातार अभ्यास द्वारा शरीर एवं मन को इच्छानुवर्ती अर्थात् इच्छा अनुसार कार्य करके लायक बनाया जा सकता है। परोक्ष रूप से अभ्यास की यह प्रक्रिया ही व्यक्तित्व का निर्माण करती है।

स्वामी जी ने कहा कि प्रतिभा योग्यता के विकास में बुद्धि आवश्यक तो है सर्व समर्थ नहीं। बुद्धिमान होते हुए भी विद्यार्थी यदि पाठ याद न करे, पहलवान व्यायाम छोड़ दे, संगीतज्ञ, क्रिकेटर अभ्यास करना छोड़ दें, चित्रकार तूलिका का प्रयोग न करे, कवि भाव संवेदनाओं को संजोना छोड़ बैठे, तो उसे प्राप्त क्षमता भी क्षीण होती जाएगी। बुद्धि की दृष्टि से कर्म कर सतत अभ्यास में मनोयोग पूर्वक लगे, व्यक्ति अपने अंदर असामान्य क्षमताएं विकसित कर लेते हैं। निश्चित समय व निर्धारित क्रम में किया गया प्रयास मनुष्य को किसी भी प्रतिभा का स्वामी बन सकता है। अभ्यास के अभाव में प्रतिभाएं कुंठित हो जाती है, उनमें व्यक्ति अथवा समाज को कोई लाभ नहीं मिल पाता। मानव शरीर अनगढ़ है और वृत्तियां असंयमित। इन्हें सुगढ़ एवं सुसंयमित करना ही अभ्यास का लक्ष्य है। अनगढ़ काया एवं मन अनभ्यस्त होने के कारण सामान्यत: किसी भी नए कार्य को करने के लिए तैयार नहीं होते। उल्टे अवरोध खड़ा करते हैं उन्हें व्यवस्थित करने के लिए निरंतर अभ्यास की आवश्यकता पड़ती है। अभ्यास से ही आदतें बनती है और अंतत: संस्कार का रूप लेती हैं। कितने ही व्यक्ति किसी भी कार्य को करने में अपने को असमर्थ मानते हैं, उन्हें असंभव जानकर प्रयास नहीं करते है। फलस्वरूप कुछ विशेष कार्य नहीं कर पाते।

किसी भी कार्य को करने का संकल्प कर लेने एवं आत्म विश्वास जुटा लेने वाले व्यक्ति उसमें अवश्य सफल होते हैं। आत्म विश्वास की कमी एवं प्रयास का अभाव ही मनुष्य को आगे बढ़ने से रोकता तथा महत्वपूर्ण सफलताओं को पाने से वंचित रहता है। मानवीय काया परमात्मा का विलक्षण संरचना है। उसे जैसा चाहें ढलाया बनाया जा सकता है।

www.thearyasamaj.org

नारी! तुम मार्गदर्शिका हो

– श्री देवनारायण भारद्वाज

परमपिता परमात्मा की सम्पूर्ण सृष्टि में सृजनात्मक दृष्टि से सर्वत्र युगल प्रतीत होते हैं। मानव योनि में नर और नारी दोनों एक दूसरे के पूरक हैं तथा समाजरूप और राष्ट्ररूप रथ के दो चक्र हैं। जैसे एक चक्र से रथ नहीं चल सकता ऐसे ही अकेले पुरुष या अकेली नारी से समाज और राष्ट्र आगे नहीं बढ़ सकता। नर और नारी कहीं भाई और बहिन के रूप में, कहीं पुत्र और माता के रूप में, कहीं पति और पत्नी के रूप में, कहीं ब्रह्मचारी और ब्रह्मचारिणी के रूप में, कहीं आचार्य और आचार्या के रूप में, कहीं प्रचारक और प्रचारिका के रूप में, कहीं लेखक व लेखिका के रूप में समाज में अपने-अपने कार्यकलापों को करते दृष्टिगोचर होते हैं।

फिर भी जीवन निर्माण में नारी का महत्वपूर्ण स्थान होता है। वह माता, पत्नी, पुत्री, बहन आदि रूपों में पुरूष को सम्बल प्रदान करती है। जीवन निर्माण का कार्य जितनी सरलता से वह कर सकती है कोई दूसरा नहीं कर सकता। इसीलिए तो वेद में कहा गया है '' शुद्धा पूता योषिता यज्ञिया इमा:'' अर्थात स्त्रियाँ शुद्ध है, पवित्र हैं और यज्ञ समान आदरणीय हैं वेद का यह मंत्र नारी के महत्व को दर्शाता है। वैदिक काल में उनके अधिकार पुरुषों के तुल्य ही थे। न केवल गृहस्थ क्षेत्र में अपितु आध्यात्मिक और धार्मिक क्षेत्र में भी उनको अत्यन्त उच्च स्थान प्राप्त थे।

ऋषियों की भांति धोसा, अपाला, लोवामुदा, गार्गी आदि ऋषियों ने परमात्मा के दिव्य ज्ञान का समाधि अवस्था में साक्षात्कार किया था। ''स्त्री हि ब्रह्म वभूविथ'' से प्रमाणित होता है कि स्त्रियां न केवल वैदिक कर्म-काण्डों में ही भाग लेती थीं बल्कि ब्रह्म बनकर यज्ञ संचालन कार्य भी करती थी। वे युद्धों में भी भाग लेती थीं।

देवासुर संग्राम में देवताओं के सेनापति के दायित्व को धारण किए हुये चक्रवर्ती सम्राट दशरथ के साथ उनकी भार्या महारानी कैकेयी रथ पर आरूढ़ थी। असुरों का एक सनसनाता हुआ बाण आया। उसकी चोट ने रथ के पहिये की धुरी को काटा। रथ का पहिया डगमगाया तो प्रत्युत्पन्न बुद्धिमती कैकयी को जब कुछ नहीं सूझा तो उसने अपना हाथ उस धुरी के अन्दर दे दिया। पहिया स्थिर हुआ, दशरथ की बाण वर्षा से असुरों की सेना परास्त हुई ओर देवताओं की जय-जयकार हुई। बाद में दशरथ जी ने अपनी प्राणवल्लभा अपनी हृदय साम्राज्ञी को रक्त रंजित अवस्था में देखा तो दंग रह गये। अपने प्राणों की बाजी लगाकर भी कैकयी ने महाराज दशरथ के साथ युद्ध में अपनी भूमिका निभाकर देवताओं की विजयश्री के मार्ग को प्रशस्त किया।

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ने अपने पुत्र को अपनी पीठ पर बाँधकर दोनों हाथों में नंगी तलवार पकड़ ली, घोड़े की लगाम को दांतो में दबा लिया और अपनी महिला सैनिकों के साथ बारह-बारह सौ नरपिशाच अंग्रेजो की गर्दनों को काट-काटकर माँ भारती की गोद को पाट दिया। ये वीरता का, शौर्य का, तेजस्विता का, ओज और तेज का प्रारूम भारत की स्त्री ने सारे संसार के सामने प्रकट किया।

आजादी के उस बहुत लंबे संघर्ष में देश ने भगत सिंह को, राजगुरू को और सुखदेव को फाँसी के फंदे पर झूलते हुए देखा था। अंडमान की काल कोठरियों में पत्थर की भीतियो पर हृदय के रक्त से शौर्य की कहानियाँ लिखी गई। समुद्र की उटाल तरंगो से पौरुष के अभिलेख लिखे गये। भगतसिंह जब फाँसी के फंदे पर झूले तो उनकी माँ विद्यावती की आंखो से आंसू बहे। लोगों ने कहा माँ! तू शहीद की माँ होकर रोती है, ये शोभा नहीं देता। भगत सिंह की माता ने कहा–

आपकी सुविधा हेतु

आप आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ द्वारा संचालित विभिन्न प्रकल्पों हेतु अपना पावन दान निम्नलिखित खाते में सीधा जमा कराकर पुण्य के भागी बन सकते हैं–

बैंक	नाम व खाता संख्या	बैंक कोड संख्या
इलाहाबाद बैंक, रेलवे रोड, बहादुरगढ़,झज्जर	आत्म शुद्धि आश्रम 20481946471	IFSC-A0211948

www.thearyasamaj.org

''मैं अपने पुत्र की शहीदी पर नहीं रो रही हूं। मैं तो अपनी कोख पर रो रही हूँ कदाचित् मेरी कोख ने एक और भगतसिंह को जन्म दिया होता तो मैं उसको भी देश के चरणों में समर्पित कर देती। अपनी संतानों के अन्दर राष्ट्र भक्ति की भावना भरने वाली ऐसी थीं। भारत की माताएं। जिनकी घोषणा होती थी- '' मम पुत्रो शत्रुहणा मम दुहिता विराट'' अर्थात मेरा पुत्र शत्रुहन्ता है और मेरी पुत्री विराट अर्थात गौरवशाली है।

वैदिक काल में नारी परिवार में साम्राज्ञी के रूप में अभिषक्त होती थीं। नारी गौरव की यह परम्परा उपनिषद काल तक मिलती है। गार्गी, मैत्रेयी शास्त्रों की पूर्ण पड़िता शास्त्रार्थज्ञ एवं ब्रह्मविद्या की मर्मज्ञ विदुषियाँ थी।

पुरुष के निर्माण की चर्चा के विषय में महर्षि दयानन्द कहते हैं '' मातमवान, पितृवान, आचार्यवान् पुरुषो वेद:'' अर्थात पुरुष का निर्माण माता-पिता व आचार्य मिलकर करते हैं लेकिन माता का प्रथम स्थान है। इसीलिए ''माता निर्माता भवति'' माता को केवल जन्मदात्री माँ ही नहीं अपितु निर्माण करने वाली माता कहा जाता है। नारी के जीवन में चार चींजों की प्रमुखता है-संस्कार, समर्पण, वात्सल्य और स्वाभिमान, जिसे धारण करके वह चार रूपों में हमारे सामने आती है-पुत्री, पत्नी, माँ और स्त्री। पुत्री के रूप में संस्कार ग्रहण करती हो, पत्नी के रूप में समर्पित होती है। माँ के रूप में ममत्व और वात्सल्य लुटाती हो और स्त्री बनकर अपने स्वाभिमान की रक्षा करती हो और चारों रूप जब एक माँ में समाहित हो जाते हैं, तब कुछ भी शेष नहीं बचता, केवल वह माँ रह जाती है जिसका जीवन भी शिशु है और धर्म भी शिशु ही है। माँ और ममता के अतिरिक्त कुछ भी शेष नहीं बचता। माता की अपेक्षा पिता की भूमिका बहुत छोटी है।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि महान व्यक्तियों का निर्माण उनकी माताओं के अथक प्रयत्न से ही सम्भव हुआ। माताओं ने देश को भगत सिंह जैसा बलिदानी पुत्र दिया, चन्द्रशेखर आजाद जैसा योद्धा पुत्र दिया और सावरकर जैसे स्वातंत्रयचेता पुत्र को मातृभूमि के चरणों में अर्पित किया। सरदार वल्लभ भाई पटेल, भगवान राम, श्री कृष्ण, महाराणा प्रताप, शिवाजी आदि को बनाने वाली माताएं थी। भारत की प्राचीन पद्धति में नारी का मुख्य कार्य सुसंस्कारित सन्तानों का निर्माण करना था क्योंकि माता ही बच्चे की प्रथम गुरु होती है। बचपन से ही उसकी शिक्षा बच्चे को ज्ञान-अज्ञान, वास्तविकता और कृत्रिमता का बोध कराती है। उदाहरण के लिए माँ जीजाबाई ने अपने बेटे शिवा के मन में राष्ट्रप्रेम की कहानियों से वीरता की ऐसी लहर फूंक दी कि उसने राष्ट्र विरोधियों के छक्के छुड़ा दिये। माता मदालसा ने मनचाही सन्तान का निर्माण करके मातृत्व का लोहा मनवा दिया है।

जीवन के प्राय: हर क्षेत्र में नारी ने पुरूष का सहयोग दिया है। वह एक ओर अपने पुत्रों पति भाईयों को रणक्षेत्र में बलिदान होने के लिए सहर्ष भेज देती हैं और स्वयं घर का मोर्चा संभालती है। वहीं दूसरी ओर ऐसे में लड़ने वाले जवानों के लिए सहायक बनती है। घायल सिपाहियों की सेवा करती है। उन्हें सर्दी से बचाने के लिए स्वेटर भेजती है। वह आवश्यकता पड़ने पर स्वयं रणक्षेत्र में चण्डी बनकर कुद पड़ती है। रानी सारन्धा ने पति के गौरव की रक्षा के लिए छाती में छुरा घोंपने का साहस दिखाया था। रानी पद्मिनी ने अपने वैभव की परवाह न करके कुन्दन से चमकते शरीर को धधकती चिता में जौहर कर अर्पित करने का अनुपम व्रत पूरा किया था। ये देवियाँ आज भी आकाश में नक्षत्रों की तरह चमक रही है इनके अनुपम त्याग, शौर्य, वीरता व बलिदान की गाथाओं को कोई भुला नहीं सकता है।

परन्तु आज अत्यन्त स्वच्छन्दता के नाम पर नारी के

साधकों के लिए स्वर्णिम अवसर

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम फर्रुखनगर गुड़गांव में दूषित वातावरण से दूर सुरम्य स्थान पर आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित शौचालय, रसोई स्नानगृह आदि से युक्त योग-साधकों की साधना के लिए बाहर एवं भूमिगत कमरे उपलब्ध हैं। आप सादर आमन्त्रित हैं।

कृपया सम्पर्क करें:- 9416054195, 9812640989, 9813754084

www.thearyasamaj.org

आचार विचार, व्यवहार में जो अमर्यादित परिवर्तन हुआ है, वह बड़ी वेदना की बात है। विज्ञापनों के माध्यम से फिल्मों के माध्यम से तथा विदेशों में सौन्दर्य प्रतियोगिताओं के नाम पर नारी खुलेआम अपने शरीर का प्रदर्शन कर रही है।

आजादी के बाद नारी के भीतर एक भाव जगाया गया कि उसे मुक्त होना चाहिए। पति के बन्धन से मुक्त होना चाहिए, घर परिवार की जिम्मेदारी से मुक्त होना चाहिए, कर्तव्यों के बन्धन से मुक्त होना चाहिए। उसके पैर की पायल उसके पैर की बेड़ी है और उसे इन बेड़ियों को तोड़ देना चाहिए और पुरूष की बराबरी करनी चाहिए। लेकिन बराबरी वहाँ होती है जहां एक पक्ष होता हो। मैं माताओं से निवेदन करना चाहती हूं कि जिस देश ने स्त्री को केवल पुरुष की बराबरी नहीं अपितु देवताओं से भी ऊँचा स्थान दिया है यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'' का.पावन भाव चित्त में संजोया हो वहां स्त्री को पुरूष की प्रतियोगी बनना चाहिए? नहीं। परमपिता परमात्मा ने जहां स्त्री के भीतर करूणा, प्रेम, वात्सल्य और ममता को भरा है वहीं पुरूष अभियान के केन्द्र पर स्थापित है।

स्त्री अपनी करूणा, वात्सल्य, प्रेम व तेजस्विता में विराजे तथा पुरुष पुरुषोत्तम बनने का प्रयन्त करें, तो निश्चित रूप से सृष्टि का संतुलन सुंदर होगा।

नारी न किसी के पैर की जूती है न सिर की टोपी है। प्रतिद्वन्दी तो है ही नहीं। जिसके साथ प्रतिस्पर्धा करना सिखाया जा रहा है वह तो स्वयं उनको जीने का मार्ग सिखाती है। फिर वह उसकी प्रतिद्वन्दी कैसे हो सकती है? भारत की नारी कामिनी नहीं होती, वह माँ होती है, ममता का विग्रह होती है, ममता व वात्सल्य के शिखर पर विराजी होती है। वह अपने पति की भी पथ प्रदर्शिका होती है।

इसलिए इस भौतिक चकाचौंध से बाहर निकलकर सीता, सावित्री, दम्पन्ती जैसी देवियों के जीवन से प्रेरणा लेकर तथा कुसंस्कारों के जाल को हटाकर अपने अन्दर सादगी और वीरता के भाव संचालित करो और अपने पुराने गौरव को पुनः स्थापित करने के लिए संघर्ष करो।

भारत माँ जो हम सबकी माँ है, वह आज दु:खभरी निगाह से हमको निहार रही है। माँ के दु:खो को हरने वाली राम, कृष्ण, शिवा, प्रताप जैसी सन्तानों को जन्म देकर माँ के दु:ख दर्द को मिटाओ और इस भौतिकता के अन्धकार में बोंये हुए अपने गौरव को आध्यात्मिकता की रोशनी देकर पुनः प्रतिष्ठित करो।

आपका स्थान पुरुषों से ऊँचा है। पुरुषों के साथ प्रतियोगिता करने में स्त्री सुख का अनुभव करती है तो मैं विरोध नहीं करती परन्तु इतना जरूर है कि यह प्रतिस्पर्धा और प्रतियोगिता सुखदायी नहीं, दु:खदायी ही बनेगी। पुरुषों के लिए व्यवस्था है कि स्वस्थ रहने के लिए वेदड़ बैठक लगाएं, कसरत करे किन्तु तुम्हारें लिए उत्तम है कि तुम ध्यान लगाओ, संकीर्तन करो, नृत्य करो क्योंकि तुम्हारी बनावट और प्रकृति पुरूषों से भिन्न है। तुम्हारा वजूद भिन्न है, उसके लिए व्यवस्था भिन्न है।

पुरुष की नकल करोगी तो फिर सदैव टूटी-टूटी सी रहोगी। बाजार में स्वच्छंद धूमोगी तो ठोकरें खाओगी। रात में घर आओगी तो तुम्हें अच्छा नहीं लगेगा, सुख नहीं मिलेगा। मैं यह नहीं कहती कि तुम तरक्की मत करो। खूब उन्नति करो। पढ़ो-लिखो आगे बढ़ो। जहाज उड़ा रही हो। रॉकेट भी उड़ाने लगोगी। सब कुछ करोगी। करना भी चाहिए, परन्तु अपने नारित्व और सतीत्व को खोकर नहीं। सतीत्व को खोकर तुम स्वयं लुट जाओगी, इसलिए जो कुछ भी करो अपने सतीत्व को महत्व को संभाल कर करो, यही तुम्हारा अस्तित्व है, वजूद है। तुम्हारा शाश्वत रूप महत्व है। वात्सल्य और वत्सलता है, करूणा त्याग, समर्पण है। संसार को अपना परिचय दो कि तुम क्या हो, क्या कर सकती हो?

- ऊंचागांव, नसीरपुर, सादाबाद, हाथरस, मथुरा

ग़ज़ल

(कृष्ण 'सौमित्र' साहित्यालंकार)

नेता बनकर सफल हो गए
काले कव्वे धवल हो गए
देश आज कंगाल हो गया
नेता धन्नामल हो गए
जिनकी नहीं थी झौपड़ी ढंग की
उनके ऊँचे महल हो गए
महँगाई की मार झेलते
होरी धनिया विकल हो गए
पहरेदार सब लगे कांपने
चोर लुटेरे सबल हो गए।

www.thearyasamaj.org

हंसो और हंसाओ

भरतु की पत्नी शर्मीली थी। वो सभी को भाई कहकर बोलती थी। एक दिन भरतु ने अपने भाई को खेत में ले जाने के लिए आवाज दी तो उसकी पत्नी ने कहा, कौन बोल रहा है भाई? भरतु ने फिर आवाज दी ताकि वो पहचान ले, परन्तु उसकी पत्नी ने फिर कहा– कौन बोल रहा है भाई? भरतु ने गुस्से में कहा–भरतु बोल रहा है ताई।

❑❑❑

मास्टर जी–घुग्घु ये बता छुट्टी किस दिन की होनी चाहिए?

घुग्घु–मास्टर जी जिस दिन पाठ याद नहीं हो उस दिन की छुट्टी होनी चाहिए।

❑❑❑

ताई भरपाई खटारा बस में सफर कर रही थी। उस बस का इंजन मिनट-मिनट में गरम होने के कारण बस ड्राइवर बार-बार रोककर पानी डालता था। बस में बैठी सवारियां परेशान हो गईं। ताई भरपाई से रहा नहीं गया। उसने बस ड्राइवर से कहा–हां रे बेटा, तूने चलाने के लिए दस लाख की बस ले ली, इसमें एक छोटा सा नलका नहीं लगवाया जाता?

❑❑❑

नत्थु कभी भी हवाई जहाज में नहीं बैठा था। उसे हवाई जहाज में बैठने का मौका मिल गया। उसने पायलेट के कानों पर हैडफोन लगा देख लिया। नत्थु उसका हैडफोन उतारने लगा। पायलट ने कहा– यह तू क्या कर रहा है? नत्थू बोला–ये बात कैसे हो सकती है, टिकट लेकर तो हम चढ़े हुए हैं और गाने तू अकेला सुने।

❑❑❑

भरतु–भाई नत्थु, अपने गांव में स्वीमिंग पूल बनाने में थोड़ा सहयोग दें।

नत्थु–ठीक है भाई भरतु, मेरे नाम की आधी बाल्टी पानी की लिख दे।

❑❑❑

रामू (श्यामू से) आज मैंने पुलिस को बेवकूफ बना दिया।

श्यामू (खुश होकर) पुलिस तो मुझे गोपाल समझकर पीट रहा था पर मैं तो श्यामू था।

–रवि शास्त्री 'आत्मशुद्धि आश्रम'

नारी गौरव

– डॉ. दर्शन लाल जी आजाद

गारगी, गोत्मी, सीता आर्दश है नारी की,
किरण मई, अनसूया गौरव संस्कृति हमारी की,
नारी गौरव के लिए पद्मनी कूदी आग में,
अपनी चरबी डाली नारी, गौरव के चिराग में।

भक्ति रस फूटा मीरा के मधुर गीतों से,
झांसी की रानी जूझ खूनी चीतों से,
झांक कर यदि हम देखें अपने अतीतों में,
नारी का पूरा भाग है पुरुष की जीतों में।

कल्पना में नारी की कल्पना साकार हुई है,
कल्पना यथार्थ की प्रेरणा का आधार हुई है,
यह नारी हर क्षेत्र में अब आगे बढ़ रही है,
तैंतीस प्रतिशत हक की लड़ाई लड़ रही है।

पचास प्रतिशत तो है इनका हक बनता,
देश व समाज की इन्हें है बेशक चिन्ता,
राजनीति के क्षतिज पर छाई माया व ममजा
आदर्श बनी सोनिया, सुषमा, शीला व ललता।

आधे देश पर कर रही आज राज है नारी,
पांव की जूती नहीं अब सर का ताज है नारी,
इन्द्रिा ने नारी का गौरव व मान बढ़ाया है,
किरण बेदी ने विश्व में ऊंचा स्थान बनाया है।

महिला आज ऊँचाई के शिखर पर खड़ी है,
बहेंरी पाल तो ऐवरेस्ट पर ही जा चढ़ी है,
ओलम्पिक से स्वर्ण पदक लाती है महिला,
देश के मस्तक को ऊंचा उठाती है महिला।

युग ने करवट बदली नारी अब जागी है।
आजाद यह शिक्षा पा हुई धन्य भागी है।।

संघर्ष मनुष्य को जीवन जीने की कला सिखाने के लिए समुपस्थित होते है। इसलिए संघर्षो को अपना सौभाग्य समझना चाहिए।

–राजहंस मैत्रेय

www.thearyasamaj.org

युवाओं के सहयोग के बिना राष्ट्र निर्माण सम्भव नहीं

– ब्र. शिवदेव आर्य

युवा राष्ट्र का प्राण है। वही राष्ट्र की शक्ति है, गति है, स्फूर्ति है, चेतना है, ओज है, तेज है और राष्ट्र की प्रज्ञा है। युवाओं की प्रतिभा, तप, त्याग और बलिदान राष्ट्र के लिए गर्व का विषय है। युवाओं का पथ तथा संकल्प राष्ट्रीय पराक्रम और प्रताप का प्रतीक है। युवा भविष्य के कर्णधार है, जिनको आगे चलकर राष्ट्र की बागडोर संभालनी है। युवा अपनी शक्ति, सामर्थ्य तथा साहस के बल पर अपने राष्ट्र को सबसे आगे ले जाता है।

या यह कहिए युवा राष्ट्र का निर्माता होता है। वहीं वेद भी कहता है कि–''सुवीर्यस्य पतयः स्यामः'' अर्थात्–हम प्रबल शक्ति के स्वामी बनें (May we be the masters of great valour)।

युवा शब्द **''यु मिश्रणेऽमिश्रणे च''** धातु से निष्पन्न हुआ है। इसका शाब्दिक अर्थ संयोजन–वियोजन करना है अर्थात् जोड़ और तोड़ करना है।

एक तरफ भारत के लिए बहुत खुशी की बात हैं कि हमारे राष्ट्र की जनसंख्या का पचास प्रतिशत से भी अधिक हिस्सा युवा है, जिसे हम युवा वर्ग कह सकते है। जो वर्ग सामाजिक, आर्थिक, शारीरिक, मानसिक सभी रूपों से सर्वाधिकार सक्रिय एवं सतर्क रहता है और रहना भी चाहिए, क्योंकि यह उम्र ही इसी के लिए होती है। वह दूसरी तरफ हमारे युवक हिंसक तथा अशिष्ट होते जा रहे हैं। इतना ही नहीं हमारे युवक चौराहों पर खड़े होकर छेड़छाड़ के प्रमुख भी बनते जा रहे हैं, माता-पिता की बातों को न मानना, गुरुओं का अनादर, सलमान तथा कैटरीना को अपना आदर्श मानना इत्यादि अनेक क्रियाकलापों को देखकर मन क्रोधाग्नि से प्रज्वलित दुःखी हो उठता है। ऐसे समय में युवाओं को सशक्त मार्गदर्शन कर उन्हें राष्ट्रनिर्माण की सेनाओं में भर्ती करा देना चाहिए। आजादी के दिनों में जो तूफान उठे थे, ठीक उसी प्रकार इन दिनों में उस समय से पचास गुना अधिक तेज एवं उत्साह होना चाहिए, क्योंकि इस समय युवाओं की संख्या पहले से बहुत अधिक है।

मेरे विचार से राष्ट्र का प्रत्येक महान् कार्य युवाओं के सहयोग के बिना अधूरा है। कारण यह है कि निर्माण हमेशा बलिदानों पर टिका होता है और जब तक निर्माण के लिए बलिदान रूपी खाद नहीं डाला जाता, तब तक विकास का अंकुर फूट ही नहीं सकता। बलिदान ही युवा पीढ़ी का श्रृंगार है, झांसी की रानी, राजगुरु, सुखदेव, भगत सिंह, बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद जैसे अनेक सहस्त्रों युवाओं ने अपने जीवन का उत्सर्ग कर राष्ट्र निर्माण में अमूल्य योगदान दिया। आज इसी की आवश्यकता है। इसी भावना को वेद में भी प्रकट किया गया है कि **''वयं राष्टे जागृयाम पुरोहिताः''** अर्थात हे राष्ट्रभूमे। तुम्हारे लिए बलिदान करने वाले होवें।

युवाओं को हमेशा यह याद रखना चाहिए कि जब तक युवा किसी ज्ञानवान, चरित्रवान् एवं बुद्धिमान व्यक्ति का परामर्श नहीं लेंगे तब तक निश्चित है कि वे अपने कार्य में सुचारु रूप से सफल नहीं हो सकते। आज बड़े दुःख के साथ कहना पड़ रहा है कि हमारे राष्ट्र के अधिकांश युवा पथभ्रष्ट हो रहे हैं। वे धार्मिक, सांस्कृतिक तथा राष्ट्रीय चरित्र के नाम पर शून्य होते जा रहे हैं। वे सुख-सम्पति, मौज-मस्ती, मजाक आदि का जीवन जीना पसंद करना चाहते हैं। साथ ही वे पश्चिमी सभ्यता की रंगीन घिनौनी चादर को ओढ़कर अपने जीवन को बिताना चाहते हैं।

जब युवा सशक्त होगा तथा राष्ट्र अपने चरमोत्कर्ष पर होगा तब हम फिर शान से कह सकते हैं कि हमारा राष्ट्र विश्वगुरु है।

यह युवाओं के लिए जागृति की वेला है। युवा जानते है कि देश को कमजोर करने वाली ताकत कौन-सी है? हमें विघटनकारी प्रवृत्तियों से सावधान रहना चाहिए। युवा शक्ति को राष्ट्रीय जीवन देने के लिए जागृत होना चाहिए। हम देश के युवा हैं, समाज के युवा हैं, हमें देश की ज्वलन्त समस्याओं के समाधान के लिए सदा उद्यत रहना चाहिए।

आज हमारे राष्ट्र में समय के हालात कुछ ठीक

www.thearyasamaj.org

नहीं हैं, चहु ओर भ्रष्टाचार, अनाचार, कालाबाजारी फैली हुयी है। हिंसा का नया अवतार साम्प्रदायिकता, जातीयता के आधार पर वोट बैंक का निर्माण हो रहा है। नक्सलवाद, क्षेत्रवाद, भाषावाद आदि जैसे नये-नये वाद चल पड़े हैं। सरकारें स्वयं पथभ्रष्ट होकर घोटालों के निर्माण में लगी हुयी हैं। ऐसे में हम सभी एक साथ संगठित होकर राष्ट्र में फैली हुई अनेकों कुरीतियों को इस संसार से समाप्त कर राष्ट्र को एक नई दिशा दें। यदि यह नहीं कर पाये तो कवि आपसे बार-बार पूछता रहेगा कि-

जवानों तुम्हारी जवानी कहां है,
तेरी वीरता वो पुरानी कहां है?

आओं हम सब मिलकर इस सपूर्ण राष्ट्र को सुधारने की जिम्मेदारी लें।

रख हौंसला वो मंजर भी आयेगा,
प्यासे के पास चलकर समन्दर भी आयेगा।
कर हिम्मत और चल दे मुसाफिर,
मंजिल भी मिलेगी और मजा भी आयेगा।

आत्म शुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य

1. श्रीमती इन्दुपुरी जे.के. मेमोरियल ट्रस्ट मोगा, पंजाब
2. चौ. नफेसिंह जी राठी पूर्व विधायक क्षेत्र बहादुरगढ, हरि.
3. श्री वीरसेन जी मुखी कीर्तिनगर, दिल्ली
4. श्री बलजीत सिंह जी उपाध्यक्ष किसान मोर्चा भाजपा दिल्ली प्रदेश, नजफगढ़
5. आचार्य यशपाल जी कन्या गुरुकुल खरखोदा, हरि.
6. श्री हरि सिंह जी सैनी, प्रधान आर्य समाज, हिसार
7. चौ. मित्रसेन जी सिन्धु आर्य, उद्योगपति, रोहतक
8. श्री सत्यपाल जी वत्स काष्ठ मण्डी, बहादुरगढ़
9. श्री जयकिशन जी गहलौत, नजफगढ़, दिल्ली
10. श्री रमेश कुमार राठी, ७ विश्वा, जटवाड़ा मो, बहादुरगढ़
11. श्री जे.आर. वरमानी, गुड़गाँव, हरियाणा
12. श्रीमती नीतू गर्ग, ईशान इंस्टीट्यूट, ग्रेटर नोएडा
13. श्री रामवीर जी आर्य, सै. ६, बहादुरगढ़
14. श्री जितेन्द्र कुमार जी आर्य, सूरत, गुजरात
15. श्री राव हरिशचन्द्र जी आर्य, नागपुर
16. श्री ओमप्रकाश आर्य, आर्यसमाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली
17. श्री देव प्रकाश जी पाहवा, राजौरी गार्डन, दिल्ली
18. श्री जयदेव जी हसीजा 'प्रेमी' वानप्रस्थी, गुड़गांव
19. स्वामी वेदरक्षानन्द जी सरस्वती, आर्ष गुरुकुल कालवा
20. रविन्द्र कुमार आर्य-सैक्टर ६, बहादुरगढ़
21. नेहा भटनागर, सुपुत्र सुरेश भटनागर, तिलकनगर, फिरोजाबाद
22. अमित कौशिक, सु. श्री महावरी कौशिक, मलिक कॉलोनी, सोनीपत
23. सरस्वती सुपुत्र वे.के. ठाकुर, न्यू सिया लाईन लखनऊ (उ.प्र.)
24. दीपक कुमार, सुपुत्र श्री भगवान् गिरि, बोकारो, झारखण्ड
25. कृष्णा दियोरी भरेली, सु. श्री शैलेन्द्र नाथ दियोरी, गोहाटी, असम
26. रवि कुमार जायसवाल, सुपुत्र श्री आर.एस. जायसवाल, गोपालगंज, बिहार
27. श्री सुरेश कौशिक, मॉडल टाउन, बहादुरगढ़
28. श्री गौरव, सु. श्री कामेश्वर प्रसाद, हनुमान नगर, कंकड़बाग, पटना
29. श्री परमजीत सिंह, सुपुत्र सरदार गुरनाम सिंह, दसुआ (पंजाब)
30. श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंघल, शक्ति विहार, दिल्ली
31. श्री प्रेम कुमार जी गर्ग, दनकौर (उ.प्र.)
32. श्री ओमप्रकाश जी अग्रवाल, ईसान इन्स्टीट्यूट, नोएडा
33. कु. शिखा सिंह, सु. श्री सीपीसिंह, सुभाष नगर, हरदोई उ.प्र.
34. कु. नेहाराज, सु. श्री राजन कुमार, बाकरगंज पटना (बिहार)
35. कु. गितिका, सु. श्री प्रमोद शुक्ला, आजादनगर हरदोई उ.प्र.
36. कु. विदिशा, सु. श्री राजकमल रस्तोगी, इन्दिरा चौक बदायूं उ.प्र.
37. श्री मनोज, सु. श्री जे.एस.विस्ट, पूर्वी ग्रेटर कैलाश दिल्ली
38. कु. सविता, सु. रमेश चन्द्र यादव, रानीबाजार, सहारनपुर
39. श्री हर्ष कुमार भनवाला, सैक्टर-1, रोहतक (हरि.)
40. श्री ईश्वरसिंह यादव, गुड़गांव, हरियाणा
41. श्री वेदपाल जी आर्य, महावीर पार्क, बहादुरगढ़
42. श्री बलवान सिंह सोलंकी, शक्तिनगर, बहादुरगढ़
43. मा. हरिश्चन्द्र जी आर्य, टीकरी कलां, दिल्ली
44. श्री सोहनलाल जी मनचन्दा, शिवाजीनगर, गुड़गांव
45. श्री स्वदीप दास गुप्ता, जमशेदपुर, झारखण्ड
46. श्री अजयभान सिंह यादव, कानपुर, उ.प्र.
47. श्री स्वदीप दास जी गुप्ता, जमशेदपुर, झारखण्ड
48. श्री अजयभान यादव, कानपुर सिटी, उ.प्र.
49. चौ. हरनाथ सिंह जी राघव, खेड़ला, गुड़गांव
50. श्री देवीदयाल जी गर्ग, पंजाबीबाग, नई दिल्ली
51. श्री आर.के. बेरवाल, रोहिणी, नई दिल्ली
52. पं. नत्थूराम जी शर्मा, गुरुनानक कॉलोनी बहादुरगढ़
53. श्री आर.के. सैनी, हसनगढ़, रोहतक
54. श्री राजकुमार अग्रवाल, मुल्तान नगर, दिल्ली
55. श्रीमती कुसुमलता गर्ग, दिलशाद गार्डन, दिल्ली
56. श्री बलवान सिंह, साल्हावास, झज्जर
57. श्री अजीत चौहान, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली
58. यज्ञ समिति झज्जर
59. श्री उम्मेद सिंह डरोलिया, काठमण्डी, बहादुरगढ़
60. श्री अम्बरीश झाम्ब, गुड़गाँव, हरियाणा
61. श्री गणेश दास एवं श्रीमती गरिमा गोयल, नया बाजार,दिल्ली
62. श्री राजेश आर्य, शिवाजी नगर, गुडगांव
63. मास्टर प्रहलाद सिंह गुप्ता, रोशन पुरा,गुडगांव, (हरियाणा)
64. श्री राजेश जी जून, उपचेयरमैन, जिला परिषद झज्जर
65. श्री अनिल जी मलिक, पूर्व उपाध्यक्ष, टीचर कॉलोनी बहादुरगढ़
66. द शिव टर्बो ट्रक यूनियन, बादली रोड, बहादुरगढ़
67. श्री राधेश्याम आर्य, रामनगर, त्रिनगर, दिल्ली
68. सुपरिटेन्डन नाहर सिंह, बिजवासन, दिल्ली

www.thearyasamaj.org

जीवन जीने की कला

– तरसेम कुमार आर्य

विश्व की सबसे प्राचीन पुस्तक 'ऋग्वेद' का एक मन्त्र है। **स्वस्ति पन्थामनुचरेम, सूर्याचन्द्रमसाविव। पुनर्ददताघ्नता जानता संगमेमहि॥** ऋ 5.51.16। मैं जब भी इस वेद मन्त्र का पठन और मनन करता हूँ तो मुझे ऐसा लगता है कि वेद के इस मन्त्र में मनुष्य मात्र को जीने का ढंग दर्शाया और सिखाया गया है। इस मन्त्र के तीन भाग हैं।

पहले भाग **'स्वस्ति पन्थामनुचरेम'** में कहा गया है कि हम सब कल्याणकारी मार्ग का अनुसरण करें। कल्याणकारी मार्ग सरल.सीधे और ठीक मार्ग को कहते हैं। पर उस मार्ग की एक विशेषता होती है कि वह मार्ग हमें उद्दिष्ट स्थान तक पहुंचा सके, हमें अपनी मंजिल तक पहुंचा सके और हमारी मंजिल है प्रभुदर्शन अथवा मोक्ष प्राप्ति। कल्याणकारी मार्ग हमारे लोग और परलोक दोनों को सुधारने एवं संवारने वाला होता है। ऐसे मार्ग पर चलते हुए हम अपना भी भला करते हैं तथा अन्य लोगों का भी भला करते हैं। अतः यश के पात्र होते हैं। स्वस्ति पंथ को ही श्री गुरु नानक देव जी ने सच्चा मार्ग उचारा है। गुरुवाणी में आया है। ''सुच्चे मार्ग चलदियां उस्तत करे जहान।'' अर्थात जो मानव (स्वस्ति-सत्य) मार्ग पर चलता है, उस की प्रशंसा सारा संसार करता है। कठोपनिषद् में ऋषि यमाचार्य ने स्वस्ति पंथ को श्रेय मार्ग कह कर पुकारा है। ऋषि यमाचार्य नचिकेता को कहते हैं कि दो मार्ग 'श्रेय' और 'प्रेय' मनुष्य को अपनी-अपनी ओर आकर्षित करते हैं। उन दोनों में से श्रेय मार्ग ही कल्याण का साधन होता है। दूसरा मार्ग 'प्रेय' हमें अच्छा (प्रिय) तथा लुभावना तो लगता है पर यह मार्ग वास्तव में अच्छा नहीं होता।

मन्त्र का दूसरा भाग है ''सूर्या चन्द्रमसाविव'' अर्थात् हम सूर्य और चन्द्र के समान अपना जीवन अन्दर धारण करना चाहिए।

अग्नि का मूल स्त्रोत सूर्य है। सूर्य ही अपने सौर जगत् का जीवन, ज्योति और प्राण है। उसकी ऊष्मा और उसी के प्रकाश से रंगरूप और संसार आदि सृष्टि दिखाई देती है। प्राणियों को जीवन शक्ति प्रदान करने के साथ-साथ सूर्य में और भी बहुत से गुण हैं जो सूर्य की महानता को दर्शाते हैं। सूर्य महान् दानी तो है ही लगभग दो अरब वर्ष से वह निरंतर प्रकाश तथा ऊर्जा का दान कर रहा है। सूर्य और चन्द्र नियम पालकता के परिचायक हैं। नियम पालक के साथ सूर्य और चन्द्र समय पालकता के भी सूचक हैं न केवल सूर्योदय, सूर्यास्त, चन्द्र उदय आदि का समय निश्चित है परन्तु किस-किस समय पर सूर्य, चन्द्र और पृथ्वी कहां-कहां स्थित होंगे, इनका पता वर्षों पहले ही चल जाता है। इसके आधार पर पंचांग बनाये जाते हैं। पाठकों को स्मरण होगा कि कुछ वर्ष पहले 1994 में दीपावली पर जब पूर्ण सूर्य ग्रहण लगा था तो कई दिन पूर्व ही समाचार पत्रों में संसार के मानचित्र प्रकाशित कर उस मानचित्र पर एक पट्टी दिखाई गयी थी, जहां से पूर्ण सूर्य ग्रहण देखा जा सकता था। सूर्य प्रकाश का मुख्य स्त्रोत है, और प्रकाश ज्ञान का प्रतीक है। सूर्य की भाँति जो व्यक्ति दूसरों को पथ प्रदर्शन द्वारा, सत्यप्रेरणा द्वारा और ज्ञान प्रदान द्वारा प्रकाशित करता है, वही सच्चा मनुष्य कहलाने का अधिकारी है। सूर्य की तीक्ष्ण किरणें रोगवर्धक कृमियों का नाश करती हैं। हम भी जीवन की बुराईयों का नाश करें। बुराइयों के विरोध में उठें। इस प्रकार गम्भीर विवेचन करने पर सूर्य के और भी अनेक गुणों को ढूंढा जा सकता है जिनको धारण कर व्यक्ति अपने जीवन में अधिक लाभ प्राप्त कर सकता है। सूर्य के इन विलक्षण गुणों के कारण ही वेद बार-बार सूर्य का अनुसरण करने की हमें प्रेरणा देते हैं। ऋग्वेद में एक अन्य स्थान पर आया है **''तन्तुं तन्वन, रजसो भानु-मन्विहि''**, अर्थात हे मनुष्य। जीवन के ताने बाने को बुनते हुए तू आकाश के सूर्य का अनुसंरण कर। सामवेद भी कहता है। 'अहं सूर्य इवाजनि' मैं सूर्य के समान हो जाऊं।

www.thearyasamaj.org

सूर्य में जो तेज है वह हममें आ जावे तो काई हमसे छेड़छाड़ करने का साहस भी न कर सके।

मन्त्र के तीसरे और अंतिम भाग में तीन गुणों का वर्णन है जिन्हें धारण करने के लिए हम इन तीन गुणों के धारणकर्ता मनुष्यों की संगत में रहने का संकल्प लें।

सबसे प्रथम हमें 'ददता' अर्थात दानशील व्यक्ति के समीप रहने का यत्न करना चाहिए। उन लोगों को देखकर हम भी दान करने की ओर अग्रसर होंगे। क्योंकि कहा भी गया है कि -'जैसी संगत, वैसी रंग' हम ऊपर लिख चुके हैं कि सूर्य महानदानी है और विश्व में महाभारत का कर्ण भी दान करने के लिए प्रसिद्ध है। जब उसके पास दान देने का कुछ भी नहीं था तो उसने नकली दांत जो स्वर्ण का बना हुआ था पत्थर से तोड़कर वही दान कर दिया था। सम्भवत: इसी कारण ही कर्ण को सूर्यपुत्र कहा गया है। अंग्रेजी में एक कहावत है Charity is the salt of riches.

नींबू, गाजर, कच्चे आम आदि फल तथा सब्जियां कुछ दिन के बाद गल सड़ जाते हैं, परन्तु उनको काट कर उनमें नमक मिला देने से न केवल वे सब बहुत दिनों तक खराब नहीं होते अपितु उनका स्वाद तथा उनकी उपयोगिता भी बढ़ जाती है। इस प्रकार दान देने से धन-वैभव का निवास हमारे घरों में चिरस्थाई हो जाता है।

दूसरा गुण है 'अघ्नता' अर्थात् जो हिंसा न करता हो। हम स्वयं दुखी होना नहीं चाहते हमें भी किसी को मन, वचन तथा कर्म से दु:खी नहीं करना चाहिए। किसी का बुरा सोचना भी नहीं चाहिए। महात्मा गांधी जी ने हमेशा अपने जीवन में सत्य तथा अहिंसा को धारण किया। तीसरा गुण है 'जानता' हम ज्ञानवान बनें तथा एक दूसरे के दृष्टिकोण को जानें। न केवल व्यक्तियों अपितु भिन्न-भिन्न समुदायों तथा राष्ट्रों में लड़ाई, झगड़े एक दूसरे को न समझ सकने के कारण ही होते हैं।

अत: जो भी प्राणी अपने अन्दर इन तीन गुणों 'ददता, अघ्नता, जानता' को धारण कर लेगा उस का अवश्य ही कल्याण होगा और उसके सम्बन्ध में कहा जायेगा। 'उस्तुति (स्तुति) करें जहान्।

किसी कवि ने इस मन्त्र का हिन्दी अनुवाद करते हुए लिखा है

सूर्य चन्द्र सम प्रभु जीवन में
स्वस्ति सुपथ पर सदा चलें,
ज्ञानी, दानी बनें अहिंसक
सत्संग ही सदा करें।
पूरक होवे सदा परस्पर
मिल जुल कर चलना सीखें।
सूरज सम तेजस्वी बनकर,
शान्त चन्द्रमा सम दीखें।

आर्य समाज, बठिण्डा

जीवन

–हरवंशलाल कपूर

मान्यवर ममताज होकर जी रहे हैं।
लोग बेआवाज होकर जी रहे हैं।।

इस अनन्त आकाश पर दृष्टि लगाये।
हसरतें परवाज होकर जी रहे हैं।।

मुश्किलों में भी हमेशा मुस्कराए।
आपका अन्दाज होकर जी रहे हैं।।

जिन्दगी को मौत पर पूरा यकीं है।
हम बड़े जांबाज होकर जी रहे हैं।।

सौंपदो सब उलझनें इस बेनवा को।
आप क्यों नाराज होकर जी रहे हैं।।

फैसला खुद है तेरा इन्साफ ईश्वर।
हम तेरे हमराज होकर जी रहे हैं।।

अंजुमन संगीत सुनना चाहती है।
हम सदाए साज होकर जी रहे हैं।।

आ इरादों को सूर्य मंजिल बढ़ायें।
क्यों महज अल्फाज होकर जी रहे हैं।।

www.thearyasamaj.org

टंकारें का सितारा

- ऋषि राम कुमार

जब धर्म के ठेकेदारों ने धर्म को तोड़ मरोड़ दिया,
पंडो ने अपने ढंग से धर्म अपने हित में मोड़ दिया,
धधकती ज्वाला में जब विधवा को जलाया जाने लगा,
अधर्मो के दावानल ने फिर भ्रष्टाचार को ओढ़ लिया।

सती प्रथा, छूआ-छूत और बाल विवाह को बोल वाला था,
पथ भ्रष्ट हुआ मानव नहीं कोई पूछने वाला था,
नारी अपराध और व्याभिचार अधर्मो का घोर अन्धेरा था,
अन्धविश्वास और पाखंड ने सबको दिया घेरा था।

अस्तित्व मिट रहा था मानव का तब चिन्तन धारा ने मनन किया,
भारत की पावन धरती पर ईक क्रान्तिकारी ने जन्म लिया,
धर्म की ध्वजा हाथ में लिए ईक बंजारा आया था,
गुजरात का वो रहने वाला ग्राम टंकारा बतलाया था।

अजय अकेला ब्रह्मचारी प्रबल झंकार लिए आया था वो,
मन में मुखरित आशा पावन संदेश लाया था वो,
खाली हाथ खड़ा सामने हिमालय सा अड़िग अड़ा था वो,
कोई शस्त्र नहीं हाथों मे पाखंड खन्डिनी पाताका लाया था वो,

हरिद्वार में पताका जब ऋषि की लहराने लगी,
घबरा गए सब पंडे जब सच्चाई सामने आने लगी,
ऊहापोह से निकला मानव दानव वृतियां घबराने लगी,
छटने लगे झूठ के बादल लोगों में जागृति आने लगी।

खलबली मची विलक्षण व्यक्तित्व से सब घबराने लगे,
निश्छल काया के आगे सब घोर विरोध जताने लगे,
बहुआयामी प्रतिभा का धनी ऋषि मील का पत्थर था,
दूरदर्शी ऋषि के आगे शाशास्त्र से सब चकराने लगे,

देव ऋषि ने नम्रता से सब पंडो को समझाया,
सच्चे शिव के बारे में फिर सबको था बतलाया,
यह अभियान आगे भी इस तरह चलता ही रहा,
वैदिक धर्म का डंका सारे देश में फिर बजवाया।
अमोघ शस्त्र सत्यार्थ प्रकाश दिया ऋषि ने हम सब को,
आर्य समाज और यज्ञ भावना दिया ऋषि ने हम सब को,
नारी उत्थान विधवा विवाह का मान दिया ऋषि ने सबको,
देशभक्ति और अध्यात्मिक का ज्ञान दिया ऋषि सब को,

जान दे गया देश के लिए कैसा वो दिवाना था,
धार्मिक क्रान्ति में अमन का वो निडर ईक परवाना था,
मानव के मर्मज्ञ योगी ने परिस्थितियों को पहचाना था,
मजहबवाद की संकीर्ण प्रथा को दूर किया और जाना था।

जो कुछ दिया ऋषि ने उसका सब अनुकरण करो,
गायत्री मन्त्र यज्ञ और वैदिक धर्म बच्चो के मन मे भरो,
वैदिक नाद पूरे जग में बजाने का सब कर्म करो,
जागो सब मिलकर ऋषि के कर्मो को नमन करो।

-246/4, मॉडल टाऊन, गुड़गांव, हरियाणा

भजन-जन्म का सदुपयोग

प्रभु ने तुझको वाणी दी है, ओ३म् नाम सिमरने को
कान दिया है, तुझे ओ प्राणी, वेद की वाणी सुनने को
आंखे दी है प्रभु ने तुझको, ज्ञान की ज्योत जगाने को
नासिक दी है उस ईश्वर ने, हवन की सौगन्ध फैलाने को
त्वचा दी है उस प्रभु ने, शरीर को स्वस्थ बनाने को
बुद्धि दी है प्रभु ने तुझको, दूसरे को अंधविश्वास मिटाने को,
मन दिया है प्रभु ने तुझको, इन्द्रियों को वश में लाने को,
कहे राम धन्यवाद प्रभु का, नहीं दिया जन्म गंवाने को

साधना के इच्छुक सम्पर्क करें

आत्म-शुद्धि-आश्रम' बहादुरगढ़ में आधुनिक ढंग से शौचालय, रसोई, स्नानगृह आदि से सुसज्जित कमरे साधक-साधिकाओं के लिए उपलब्ध हैं। यहाँ की विशेषता आश्रम में दोनों समय यज्ञ-उपदेशादि, पुस्तकालय, निकट अस्पताल व्यवस्था, एकान्त-शान्त वातावरण। आश्रम "दिल्ली के अन्दर- दिल्ली से बाहर"। रेल-बस आदि की चौबीस घण्टे सुविधा। इच्छुक साधक- साधिकायें सम्पर्क करें।

–व्यवस्थापक, दूरभाष: 01276-230195 चलभाष: 9416054195

www.thearyasamaj.org

अनमोल वचन

1. चोर के पैर नहीं होते।
2. व्यभिचारी के दिल नहीं होता।
3. स्वार्थी का विश्वास नहीं होता।
4. क्रोधी का कोई साथी नहीं होता।
5. हठी का ईलाज नहीं होता।
6. वहम की दवा नहीं होती।
7. शराबी की इज्जत नहीं होती।
8. मांसाहारी को दया नहीं होती।
9. वैश्या के शर्म नहीं होती।
10. विद्वान् को अभिमान नहीं होता।
11. गहरा पानी चंचल नहीं होता।
12. समदर्शी को किसी से भय नहीं होता।
13. असंतोषी को सुख नहीं होता।
14. तृष्णा का अन्त नहीं होता।
15. कुसंगी का सुधार नहीं होता।
16. अंधविश्वास का उत्थान नहीं होता।
17. वेदानुयायी का पतन नहीं होता।
18. कर्म के बिना भाग्य नहीं बनता।
19. पुरुषार्थी भाग्य का सहारा नहीं लेता।
20. मर्यादा रहित जीवन कोई जीवन नहीं होता।
21. उत्तम पुरुष मरने पर भी नहीं मरता।
22. वास्तविकता छुपाने से नहीं छुपती।
23. पाखण्ड अधिक समय तक नहीं चलता।
24. वेद के बिना धर्माधर्म का निर्णय नहीं होता।
25. ज्ञान का कोई अन्त नहीं होता।
26. चरित्रहीन का कोई मूल्य नहीं होता।
27. उत्तम कार्यों में किसी का एकाधिकार नहीं होता।
28. ईश्वर के यहाँ ऊँच-नीच का भेद नहीं होता।
29. शुभ कार्यों के बिना संसार में कीर्ति नहीं होता।
30. कारण के बिना कोई कार्य नहीं होता।
31. किया हुआ कार्य कभी विफल नहीं होता।
32. संस्कारों को जागृत होने में देर लगती।
33. आत्मा का जन्म-मरण नहीं होता।
34. ईश्वर का अवतार नहीं होता।
35. अन्तर्मुख हुए बिना आत्मज्ञान का उदय नहीं होता।
36. विषय भोगों से कभी तृप्ति नहीं होती।
37. सत्य का अभाव नहीं होता।
38. सत्संग में हार नहीं होता।
39. कुतर्क से किसी बात का निर्णय नहीं होता।
40. प्रत्यक्ष में प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती।
41. ईश्वरीय नियमों में कोई परिवर्तन नहीं होता।
42. वेद के एक भी शब्द का कोई खण्डन नहीं कर सकता।
43. अर्थ शब्द का पराधीन नहीं होता।
44. ऋषि-मुनियों की बात में परस्पर विरोध नहीं होता।
45. समय किसी का इन्तजार नहीं करता।
46. नित्य वस्तु काल से प्रभावित नहीं होती।
47. काल की गति को कोई अवरुद्ध नहीं कर सकता।
48. बीता हुआ समय फिर हाथ नहीं आता।
49. काल वृद्ध को जवान नहीं छोड़ता।
50. वाक युद्ध के बिना शस्त्र युद्ध नहीं होता।
51. विद्वानों में मतभेद होते हुए भी सिद्धान्त भेद नहीं होते।
52. सिद्धान्त भेद के बिना सम्प्रदायों का जन्म नहीं होता।
53. ज्ञान और वैर कभी पुराने नहीं होते।
54. दान करने वाले का धन कभी क्षीण नहीं होता।
55. अधर्मी की कमाई का पैसा सुखदायक नहीं होता।
56. अधर्मी को उत्तम कार्यों में सफलता नहीं मिलती।
57. ईश्वर भक्ति बिना आत्मिक शान्ति नहीं मिलती।
58. सच्चा शूरवीर अन्याय को सहन नहीं कर सकता।
59. अन्याय सहने वाला अन्यायकारी से कम दोषी नहीं होता।
60. आन्तरिक शत्रु को जीते बिना बाह्य शत्रुओं को जीतना सम्भव नहीं होता।
61. ईश्वर को कोई मनुष्यों की तरह धोखा नहीं दे सकता।
62. आत्मा परमात्मा तक इन्द्रियों की पहुँच नहीं होती।
63. जीव किसी वस्तु का बीज नहीं बना सकता।
64. स्वतंत्रता का अर्थ स्वेच्छाचार नहीं होता।
65. बलवान होने का अर्थ निर्बलों को दुःख देना नहीं होता।
66. क्रोध मनुष्य को अच्छे-बुरे का विचार करने नहीं देता।
67. अभ्यास के बिना किसी कार्य में सफलता नहीं मिलती।
68. शीतल लोहे को कोई गर्म लोहे से काट नहीं सकता।
69. दूसरों का बुरा करने वालों का भला नहीं होता।
70. काठ की हांडी आग पर बार-बार नहीं चढ़ती।
71. दूसरों के अवगुण देखने पर अपने अवगुण दूर नहीं होते।
72. अपने मुख से अपनी बड़ाई करके कोई बड़ा नहीं होता।
73. पढ़े-लिखों में भी मूर्खों की कमी नहीं होती।
74. मूर्ख से वाद विवाद करने से कोई सार नहीं निकलता।
75. ईश्वर मृत्यु से डरने वाला बुरा कर्म नहीं कर सकता।

[प्रस्तुति : विक्रमदेव शास्त्री,आत्मशुद्धि आश्रम]

www.thearyasamaj.org

समस्त मानव जाति के कल्याण के लिए-एक अमूल्य चिन्तन

- डॉ. गंगा शरण आर्य

वेद ईश्वरीय ज्ञान होने से नित्य एवं स्वत: प्रमाण है जिनकी उत्पति सृष्टि के प्रारम्भ में ईश्वर मानव मात्र के कल्याण के लिए करता है जब तक मानव समाज में इनका समान रूप से पठन्-पाठन तथा तदानुकूल आचरण बना रहता है, तब तक मानव समाज भिन्न-भिन्न शाखाओं में न बटकर एक सूत्र में बंधा हुआ प्रेम पूर्वक अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता जाता है जैसे दिन में किसी को दीपक जलाने की आवश्यकता नहीं होती, किन्तु रात्रि होने पर भिन्न-भिन्न दीपकों की भरमार होने लगती है इसी प्रकार से जब वेदों का पठन्-पाठन होने की अपेक्षा मानवकृत ग्रन्थों का पठन्-पाठन शुरु हो जाता है, तब मानव समाज में बुद्धि भ्रम होकर अज्ञान रूपी रात्रि छाने लगती है जो कि धीरे-धीरे मानव समाज में अनेक साम्प्रदायिक दीपक जलवाकर उसके प्रेम रूपी दीपक को बुझाकर द्वेष रूपी अग्नि को भड़काकर देवासुर संग्राम के द्वारा उसका सर्वनाश कराने पर तुल जाती है। ऐसी अवस्था में नदी नालों को ही समुद्र से अधिक मान लिया जाता है, यही इस अल्पज्ञान की पहचान है। आज संसार में जो भी उपयोगी यंत्र, मशीनें, कम्प्यूटर आदि तथा अन्य उपकरण बनाए जा रहे हैं उनके बनाने वाला उसके उपयोग की सूचना पत्रिका में देता है, तो वह यंत्र, मशीन, उपकरण आदि बहुत अच्छी तरह से अधिक समय तक यथावत कार्य करते हैं। उसी प्रकार जब उस दिव्य शक्ति ईश्वर द्वारा ब्रह्माण्ड की रचना की गई तो उसने भी सृष्टि के ज्ञान से परिपूर्ण वेद ज्ञान मानव को दिया। इसलिए वेद ज्ञान पर चलने से मानव जाति का कल्याण संभव हो सकता है।

जैसे सूर्य तारे, चंद्रमा, वायु, जल, अन्न आदि प्रत्येक मानव के लिए है वैसे ही वेद ज्ञान भी मानव मात्र के हित लिए है दुर्भाग्यवश हम लोग आज ईश्वरीय ज्ञान कहे जाने वेद को सर्वथा त्याग कर अन्य अनेकों ग्रन्थों की भूल-भूलैया में भ्रमित हैं। वेद में समस्त ज्ञान मूल रूप से उपलब्ध हैं। वेद में किसी घटना, स्थान व व्यक्ति विशेष का कुछ भी उल्लेख नहीं है। वेद का समस्त ज्ञान पूर्णतया वैज्ञानिक, तर्कपूर्ण तथा प्रकृति क्रम के अनुरूप होकर सार्वभौमिक है। वेद में दिए गए ज्ञान का अवलम्बन लेकर ही समस्त विश्व के मनुष्य समस्त प्रकारसे सुखी रह सकते हैं तथा विश्व में शांति स्थापित हो सकती है। वास्तव में वेद में विश्व की समस्त समस्याओं का समाधान उपलब्ध है। अत: मानव मात्र का कल्याण वेदानुकूल चलने में ही है। इसी गूढ़ रहस्य को समझाने के लिए प्रत्येक ऋषि महर्षि प्रयत्न करता रहा है, दर्शन-शास्त्र, उपनिषद् आदि समस्त वैदिक साहित्य का निर्माण इसलिए हुआ है किन्तु यह मन्द बुद्धि मानव फिर भी इस गूढ़ रहस्य को न समझ कर आपस की खींचातान करते ही रहते हैं तो फिर व्यर्थ के लेखन कार्य में समय लगाने से क्या लाभ? जैसा समझते है वैसा नहीं है! देखो भोजन करने से मनुष्य की तृष्णा भले ही न मिटे, किन्तु कार्य करने की शक्ति तो भोजन से प्राप्त होती है। इसी के आधार पर संसार का कार्य सदा ही चलता है। इसी प्रकार से पुस्तकआदि के द्वारा आपस की खींचातान सर्वथा भले ही न मिटे किन्तु विचार शक्ति तो बढ़ती ही है। ज्ञान की परम्परा का मुख्य आधार यह लेखन क्रिया ही है तथा बहुत से व्यक्ति वास्तविकता को समझकर इस खींचतान से ऊपर उठकर संसार सागर से पार भी होते हैं जब छोटे से छोटा कार्य भी अपना फल अवश्य प्रदान करता है तो फिर इतना महान कार्य निष्फल कैसे जा सकता है अत: उत्तम पुरुषों को इस प्रकार के उत्तम कार्यों से कभी विमुख नहीं होना चाहिए, किन्तु अपने पूर्ण (सामर्थ्य) पुरुषार्थ से आगे बढ़ाना चाहिए यही उनका मुख्य कर्तव्य है। यही सब सुधारों का आधार है और यहीं उत्तम पुरुषों की विशेषता है क्या देखते नहीं है कि संसार में दुष्ट व्यक्ति शक्ति का विस्तार करने के लिए कितना भारी प्रयत्न करते हैं। जब दुष्ट व्यक्ति अपनी दुष्टता को भी छोड़ने के लिए तैयार नहीं होते तो फिर सज्जन व्यक्ति अपनी सज्जनता कैसे छोड़ सकते हैं। इस सज्जनता रूपी अमोघ शस्त्र को अपनाकर ही सब बुराईयों को जीता जा सकता है इसलिए इस अमोघ शस्त्र को अपना कर आपस की खींचतान को समाप्त करके सारे विश्व को अपना परिवार समझकर प्रेम का बीज बिखेर कर जाओ तभी मानव जन्म सफल होगा यही परमपिता परमात्मा की पक्षपात रहित अमृत वाणी वेद का मानव मात्र के लिए अमूल्य संदेश है।

- चरित्र निर्माण मंडल, सैनी मोहल्ला,
ग्राम-शाहबाद, मोहम्मदपुर,

www.thearyasamaj.org

देवतास्वरूप भाई परमानन्द की 139वीं जयन्ती (4 नवम्बर 2013)

-इन्द्र देव

भाई परमानन्द क्रान्तिवीर भाई मतिदास-भाई दयाले और भाई सतीदास के पवित्र वंश में उत्पन्न हुए थे जिन्होंने 17वीं शताब्दी में औरंगजेग द्वारा दिए गए भयंकर कष्ट सहते हुए शहीद तो हो गए किन्तु हिन्दू धर्म नहीं छोड़ा। यदि भाई जी को हिन्दुत्व की प्रतिमूर्ति कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। गुण, कर्म स्वभाव के आधार पर आपको देवता स्वरूप की उपाधि दी गई। 1906 में आपने अफ्रीका के कई देशों में जाकर वैदिक धर्म की श्रेष्ठता का डटकर प्रचार किया।

आपने हिन्दूओं में राष्ट्रीय व धार्मिक भावनाएँ जागृत करने के लिए देश के अनेक नगरों का दौरा किया। उनके ओजस्वी भाषणों ने हिन्दुओं में जागृति उत्पन्न की। उनका औषधि-निर्माणा का स्थान देशभक्त युवकों का केन्द्र बना रहता था। गुप्तचर पुलिस से रिपोर्ट दी कि इनके यहां बम बनाए जाते हैं। 1915 में आप बन्दी बनाए गए। आपको आजीवन कारावास की सजा देकर अण्डमान भेज दिया गया। वहां इन्हें यातनाएं देते हुए कई कार्य कराए गए।

1907 में पंजाब में हिन्दू महासभा का गठन हुआ। 1915 में भाई परमानन्द ने हरिद्वार अधिवेशन में मदन मोहन मालवीय तथा स्वामी श्रद्धानन्द के साथ अखिल भारत हिन्दू महासभा बनाई। आपके प्रयास से वीर सावरकर 1937-38 के अहमदाबाद अधिवेशन में राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाए गए। वीर सावरकर ने वहीं घोषणा कर दी कि अब अखिल भारतीय हिन्दू महासभा राजनीतिक दल है। भाई परमानन्द नेशनल असेम्बली के सदस्य चुने गए। आपने दिल्ली से साप्ताहिक हिन्दू का सम्पादन कई वर्षो तक किया। आप हिन्दुओं की दुर्दशा पर एकान्त में रोते थे।

आपने अपनी सम्पत्ति बेचकर 1930-40 में मन्दिर मार्ग नई दिल्ली-110001 में हिन्दू महासभा भवन बनवाया। यहीं अखिल भारतीय हिन्दू महासभा का कार्यालय है। यदि देश विभाजन में आपकी राय मानी जाती तो रावी नदी सीमा रेखा बनती तो लाहौर जैसा अति महत्वपूर्ण नगर भारत में ही रहता।

भाई जी, अब आपको देश तथा पार्टी की दशा बता रहे हैं नेहरू-गांधी ने 1947 में आबादी की अदला बदली नहीं की जिसके कारण 3 करोड़ मुस्लिम पाकिस्तान में नहीं गए जबकि इनके हिस्से की जमीन दी जा चुकी थी। अब इनकी आबादी 17 करोड़ हो गई है। ये स्वाभाविक रूप से आक्रामक-संगठित-मांसाहारी और सह-अस्तित्व समर्थक नहीं है इसलिए छोटी-छोटी बात पर लड़ते हैं और पुलिस द्वारा समझौता करा देने के बाद भी हथियर लेकर मारने आ जाते हैं जिसमें हिन्दू पिटता है, मार खाता है-दुर्गति होती है लेकिन विचित्रता है कि हिन्दू नेहरू-गांधी की सोच व मानसिकता का समर्थक बना ही रहता है।

देश में रावण राज्य जैसी दशा हो गई है। शराब की नदियाँ बह रही हैं। मांसाहार का प्रचलन बहुत बढ़ गया है। बलात्कार, रेप, गैंगरेप, अपहरण, डकैती, यौन हिंसा, नकली माल, मिलावटी माल, पाखण्ड, अंधविश्वास, गोवध जारी है। इसे देखकर खेद होता है। हिन्दुओं का प्रतिशत 88 से घटकर 81 रह गया है। हिन्दू को जाति-उपजाति में बांट दिया गया है। अल्पसंख्यक तुष्टीकरण चरम सीमा पर है।

आपकी बनाई हुई पार्टी की स्थिति बहुत दयनीय है फिर भी कार्यकर्त्ता संगठित नहीं है। पार्टी को धनवान प्रतिभाशाली, विद्वान, बुद्धिजीवी, संघर्षशील नेताओं की आवश्यकता है ताकि 98 वर्षीय मृत, प्रायः, पार्टी में शक्ति आए। कृपया अपना, आशीर्वाद बनाए रखें और कार्यकर्त्ताओं को सद्बुद्धि दें ताकि आपके स्वपनों का राष्ट्र बने।

जब तक नई दिल्ली में हिन्दू महासभा भवन रहेगा। तब तक देवता स्वरूप भाई परमानन्द का नाम रहेगा।

संस्थापक, हिन्दू महासभा बुलन्दशहर
निवास-18/186, टीचर्स कॉलोनी, बुलन्दशहर

वीर बन्दा सिंह बहादुर (343वीं वर्षगांठ 15-11-2013)

- डॉ. गिरीश चन्द्र गुप्त

परिचय- बाबा बन्दा सिंह बहादुर का जन्म कश्मीर स्थित पुंछ जिले के राजौरी क्षेत्र में 1670 ई. तदनुसार विक्रम संवत् 1727, कार्तिक शुक्ल 13 को हुआ था। वह राजपूतों के भारद्वाज गोत्र से सम्बद्ध थे और उसका वास्तविक नाम लक्ष्मणदेव था। 15 वर्ष की उम्र में वह जानकी प्रसाद नाम के एक बैरागी का शिष्य हो गये और उसका नाम माधोदास पड़ा। तदनन्तर उन्होंने एक अन्य बाबा रामदास बैरागी का शिष्यत्व ग्रहण किया और कुछ समय तक पंचवटी (नासिक) में रहे। वहाँ एक औघड़नाथ से योग की शिक्षा प्राप्त कर वह पूर्व की ओर दक्षिण के नांदेड़ क्षेत्र को चले गये जहाँ गोदावरी के तट पर उन्होंने एक आश्रम की स्थापना की।

गुरु गोविन्द सिंह से प्रेरणा- 3 सितम्बर, 1708 ई को नांदेड़ में सिक्खों के दसवें गुरु गोविन्द सिंह ने इस वैरागी को देखा और उन्हें सिख बनाकर उनका नाम बन्दा सिंह रख दिया। पंजाब में औरंगजेब और उसके सरदारों/सूबेदारों द्वारा सिक्खों को दी जा रही दारूण यातना तथा गुरु गोविन्द सिंह के सात और नौ वर्ष के शिशुओं की नृशंस हत्या ने बन्दा बहादुर को अत्यन्त विचलित कर दिया। गुरु गोविन्द सिंह के आदेश से ही बन्दा बैरागी पंजाब आ गये और सिक्खों के सहयोग से मुगल सूबेदारों को पराजित करने में सफल हुए। मई 1710 में उन्होंने सरहिंद को जीत लिया और सतलुज नदी के दक्षिण में सिख राज्य की स्थापना की। उन्होंने खालसा के नाम से शासन भी किया और गुरुओं के नाम के सिक्के चलवाये। जिस प्रकार दक्षिण में शिवाजी-मध्य भारत में छत्रसाल ने औरंगजेब के शासन को चुनौती दे रखी थी। उत्तर भारत व पंजाब में गुरु गोविन्द सिंह के मार्गदर्शन में बन्दा बैरागी ने औरंगजेब के अधिकार को चुनौती देकर स्वतन्त्र हिन्दू स्वराज्य स्थापित कर खालसा राजय की नींव मजबूत की।

बन्दा सिंह बहादुर या बन्दा बैरागी पहले ऐसे सिख जनरल हुए, जिन्होंने मुगलों के अजेय होने के भ्रम को तोड़ा। छोटे साहबजादों की शहादत का बदला लिया और गुरु गोविन्द सिंह द्वारा संकल्पित प्रभुसत्ता सम्पन्न लोक राज्य की राजधानी लोहगढ़ की नींव रखी। यही नहीं, उन्होंने गुरु गोविन्द सिंह के नाम से सिक्का और मोहर जारी करके, निम्न वर्ग के लोगों को उच्च पद दिलवाया और हलवाहक किसान-मजदूरों को जमीन का मालिक बनाया।

सिखों के राज्य पर मुस्लिम आक्रमण- बन्दा सिंह के नेतृत्व में, सिखों के इस नवीन राज्य में व्यक्ति-व्यक्ति में भेदभाव न रहा और निम्न वर्ग का व्यक्ति शासन में उच्च पद का अधिकारी बना। परन्तु उसका राज्य थोड़े दिनों तक ही रहा। बादशाह बहादुरशाह (प्रथम) उर्फ शाह आलम ने स्वयं चढ़ाई कर इन्हें परास्त किया और 10 दिसम्बर, 1710 ई. को सिक्खों के कत्लेआम का आदेश दिया।

राज्य-स्थापना हेतु आत्मबलिदान-बन्दा सिंह ने अपने राज्य के एक बड़े भाग पर फिर से अधिकार कर लिया और इसे उत्तर-पूर्व तथा पहाड़ी क्षेत्रों की ओर लाहौर और अमृतसर की सीमा तक विस्तृत किया। 1715 ई. के प्रारम्भ में बादशाह फर्रुखसियर की शाही फौज ने अब्दुल समद खाँ के नेतृत्व में उन्हें गुरुदासपुर जिले के धारीवाल क्षेत्र के निकट गुरुदास नंगल गांव में कई मास तक घेरे रखा। खाद्य सामग्री के अभाष के कारण उन्होंने 7 दिसम्बर को आत्मसमर्पण कर दिया। फरवरी 1716 को 794 सिखों के साथ वह दिल्ली लाये गये जहां 5 मार्च से 13 मार्च तक प्रतिदिन 100-100 की संख्या में सिखों को फांसी दी गयी। 16 जून को बादशाह फर्रुखसियर के आदेश से बन्दा सिंह बैरागी तथा उसके मुख्य सैन्य अधिकारियों के शरीर काटकर टुकड़े-टुकड़े कर दिये गए।

बन्दा बैरागी का सुशासन- मरने से पूर्व बन्दा बैरागी ने अति प्राचीन जमींदारी प्रथा का अन्त कर दिया था तथा कृषकों को बड़े-बड़े जागीरदारों और जमींदारों की दासता से मुक्त कर दिया था। बैरागी उस विषम घड़ी में हिन्दू जाति में जन्म लेने वाला ऐसा महान सपूत था जिसने शिवाजी, बाजीराव व छत्रसाल के सामान सदियों की दासता से मुक्ति हेतु स्वतंत्रता की ध्वजा न सिर्फ हाथ में ली उसे कामयाबी के साथ उत्तर भारत में फहराया। इन पर देश और हिन्दू जाति को अभिमान है। इस वीर सपूत ने राष्ट्र के पुराने गौरव को स्थापित करने का मृत्युपर्यन्त कार्य किया।

www.thearyasamaj.org

आश्रम द्वारा संचालित विविध प्रकल्पों हेतु 500/- से अधिक प्राप्त दान सूची

अन्न एवं अन्नार्थ प्राप्त दान

श्रीमती सुमन अहलावत धर्मपत्नी श्री आशाराम अहलावत, दि.	12000/-
"सत्यप्रकाश वशिष्ट पीतमपुरा, दिल्ली	12000/-
श्री राजरानी पत्नी श्री सुरेश चन्द बहादुरगढ़	5100/-
एरोल फार्मूलेशन प्रा. लि. आसौदा, झज्जर	5000/-
श्री प्रमोद जी सलुजा पंजाबी बाग, विस्तार, दिल्ली	5040/-
श्री हरीश कुमार सुपुत्र श्री ओम प्रकाश संत कालोनी	4000/-
श्री राजकुमार दिल्ली	3000/-
श्री मुकेश जी दलाल, टांडाहेड़ी	2100/-
चौ. हरनाथ सिंह आर्य राघव खेडला परिवार द्वारा, गुड़गांव.	2100/-
प्रियाक्षी सुपुत्री पूनम/राजीव मनोचा, रोहिणी, दिल्ली	1500/-
स्व. भूरोदेवी की स्मृति मध्य श्री करतार सिंह टीकरी-	1100/-
श्री सुभाष सिंगल सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1100/-
श्रीमती रामदुलारी बंसल वैदिक वृद्धाश्रम, बहादुरगढ़	1000/-
श्री वीरेन्द्र कुमार भाटिया सुपुत्र श्री सत्यपाल भाटिया महावीर पार्क, बहादुरगढ़	1100/-
श्रीमती ललिता आनन्द पत्नी श्री अनिल वीर आनन्द दिल्ली	1100/-
श्री युवराज पहलवान सुपुत्र डॉ. हवासिंह पार्षद, बहादुरगढ़	1100/-
एच.डी.एफ.सी. बैंक, नूनामाजरा	1100/-
श्री जयभगवान जी बराही रोड, बहादुरगढ़	1100/-
श्रीअभिषेक कुमार सुपुत्र श्री राजेश कुमार गाजियाबाद	1000/-
श्री अरूण जी बराही रोड, बहादुरगढ़	501/-
श्री महेन्द्र सिंह जी दहिया खाण्डा, सोनीपत	501/-
श्री संजय खुराना, रोहिणी दिल्ली	500/-
श्री अनिल जी मलिक टीचर कॉलोनी, बहादुरगढ़	500/-
स्व. सोना देवी धर्मपत्नी वैघ जगन्नाथ खानपुरकलां	500/-
श्री मायावती मदान धर्मपुरा, बहादुरगढ़	500/-

विविध वस्तुएं

कबीर आश्रम बहादुरगढ़, सरोज द्वारा	4 कट्टे चावल
फरिश्ता सॉप एण्ड चरख कै. फैक्ट्री	2 पेटी साबुन, 200/- रूपये
श्री उमेद सिंह डरोलिया काठमण्डी बहादुरगढ़	50 किलो दलिया, 100 किलो चावल
श्री अमित कुमार धर्मविहार, बहादुरगढ़	50 किलो आटा
श्री संदीप जी बहादुरगढ़	20 किलो आटा
कबीर आश्रम बहादुरगढ़	1 समय का भोजन, बच्चों को कॉपी व पैन
श्री भूपसिंह जी डबास शनि मन्दिर, टीकरी दिल्ली	1 टीन तेल
श्री लाजपत राय सामग्री स्टोर, कुतुब रोड, दिल्ली	डेढ. क्विंटल सामग्री
वेदवती पत्नी नरेश नांगलोई दिल्ली	10 किलो चावल, ढाई किलो चीनी, ढाई किलो दाल
मन्जू धर्मपत्नी मोहन लाल मदान, बहादुरगढ़	40 कॉपियां 40 पैन
श्री अनिल जी टीकरीकलां, दिल्ली	चीनी 10 किलो
पंडित रामजीवन जी योगाचार्य, रंगपुरी, दिल्ली	30 कॉपियां 20 पैन

गौशाला हेतु प्राप्त दान

स्व. डॉ. बनी सिंह आर्य सैक्टर-6, बहादुरगढ़	10000/-
डॉ. रेणु नरूला, दिल्ली	1200/-
श्री वी.एस. दहिया, सैक्टर-11, रोहतक	1100/-
स्व. श्री राजवीर जी राठी परनाला बहादुरगढ़	1100/-
ईश्वर चन्द हलवाई काठमण्डी, बहादुरगढ़	900/-

भोजनार्थ प्राप्त दान

श्री शिव कुमार गुप्ता अग्रवाल कॉलोनी, बहादुरगढ़	1 समय का भोजन
श्री सत्यव्रत सुपुत्र श्री अभयराम छिकारा, सै.-9, बहा.	1 समय का भोजन
श्री धनश्याम जी शर्मा, पटेल पार्क, शंकर गार्डन, बहा.	1 समय का भोजन
श्री राजबीर जी आर्य धर्मविहार, बहादुरगढ़	1 समय का भोजन

श्री चन्द्रभान चौधरी (पूर्व डी.सी.पी.) द्वारा एकत्रित दान राशि

श्रीमती गंधार कला जी, पश्चिम विहार, दिल्ली	500/-
श्रीमती सुभाषनी आर्या जी पश्चिम विहार नई दिल्ली-63	250/-
डॉ. पुष्पलता वर्मा, विकासपुरी, नई दिल्ली	150/-
अचला क्लॉथ इम्प्रीमियम, अशोक नगर, नई दिल्ली	150/-
श्रीमती प्रवीण मेहन्दीरत्ता, विकासपुरी, दिल्ली	150/-
श्री सेठी परिवार, विकासपुरी, दिल्ली	100/-
श्री एच.पी. खण्डेवाल विकासपुरी, दिल्ली	100/-
लक्ष्मी फर्नीचर गुलाब बाग	100/-
श्रीमती प्रेमलता जी महाजन, विकासपुरी, नई दिल्ली	51/-
मैसर्स कुमार स्टील, उत्तमनगर, नई दिल्ली	50/-

मुद्रक व प्रकाशक : स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी', सम्पादक एवं मुख्याधिष्ठाता-आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जिला-झज्जर (हरियाणा), पिन-124507 द्वारा मयंक प्रिन्टर्स, 2199/64, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-110005, दूरभाष-41548503, चलभाष-9810580474 से मुद्रित, आत्म-शुद्धि-पथ कार्यालय-आत्मशुद्धि आश्रम से 15 नवम्बर 2013 को प्रकाशित एवं प्रसारित।

www.thearyasamaj.org

ओ३म् त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।।

।। ओ३म् ।।

"जीवेम् भूयश्च शरदः शतात्"

आमन्त्रण पत्र

राष्ट्र, धर्म, व मानवता के सबल रक्षक, वेद, यज्ञ, योग-साधना केन्द्र, आत्मशुद्धि आश्रम के मुख्याधिष्ठाता

पूज्यपाद स्वामी धर्ममुनि जी महाराज दुग्धाहारी के

78वें जन्मदिवस के शुभावसर पर

आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध संन्यासी योगशिरोमणि डा० स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती
योगधाम ज्वालापुर, हरिद्वार की अध्यक्षता में

बृहद् यज्ञ सुर और संगीत का भव्य आयोजन

बुधवार 20 नवम्बर 2013

मध्यान्होपरान्त 2:30, से 6:30 तक तत्पश्चात् ऋषिभोज

-:गायक कलाकारः-

पं० श्री सन्दीप जी आर्य, श्री हरीश कुमार जी आर्य (भजनोपदेशक)
आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली, पं० जय भगवान आर्य
श्री लक्ष्मण प्रसाद सिंह जी संगीताचार्य नरेला

पं. रमेशचन्द्र जी आर्य (झज्जर)
श्री रामानन्द सिंह जी आर्य (बिहार)
श्रीमती दयावती जी आर्या (रोहतक)

उपरोक्त आयोजन में आप इष्टमित्रों सहित सादर आमंत्रित हैं, समय पर पधारकर हमारा उत्साह बढ़ायें और यज्ञोपदेश व संगीत का आनन्द उठाऐं। संयोजक : श्री राजवीर जी आर्य, वा. इशमुनि जी,

-: निवेदक :-

सत्यानन्द आर्य (प्रधान ट्रस्ट)
दर्शनकुमार अग्निहोत्री (मंत्री)

आचार्य राजहंस मैत्रेय
व्यवस्थापक विक्रम देव शास्त्री

आत्मशुद्धि आश्रम (पं. न्यास) बहादुरगढ़ 124507 जि. झज्जर (हरियाणा)
दूरभाष : 01276-230195, चलभाष : 9416054195

ओ३म् त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।।

www.thearyasamaj.org

आत्म – शुद्धि – पथ मासिक
नवम्बर 2013
छपी पुस्तक – पत्रिका
एच.ए.आर.एच.आई.एन/2003/9646
पंजीकरण संख्या पी/रोहतक-035/2012-14

प्रेषक – आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़, झज्जर (हरियाणा)-124507

सेवा में -

दानदाताओं से निवेदन

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ प. न्यास द्वारा स्थापित शाखा अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम खेड़ा खुर्रमपुर रोड़, फर्रूखनगर, गुड़गांव में शीघ्र ही भव्य भवन निर्माण हो चुका है जिसमें आप अपने निकटतम सम्बन्धी के नाम का पत्थर लगवा कर उनकी स्मृति चिरस्थायी करवा सकते हैं।

1. अण्डरग्राउन्ड साधना हाल सत्संग भवन 30' x 62'	लागत	21,00,000/-
2. धर्मार्थ चिकित्सालय, आधुनिक सुविधाओं से सुजज्जित 30' x 43'	लागत	15,00,000/-
3. भव्य यज्ञशाला (उपासना मन्दिर) 30' x 30'	लागत	11,00,000/-
4. दो कमरे बरान्डा, किचन, लैटरीन, बाथरूम सहित 12' x 10' एक कमरे की	लागत	2,50,000/-
5. साधकों के लिए अण्डर ग्राउन्ड 6 कमरे 12' x 9'	लागत	1,00,000/-

आप सभी के पुनीत सहयोग से यह महती कार्य वैदिक संस्कृति प्रचार प्रसार में अग्रसर हो सकेगा और आप भी धार्मिक कार्य के पुण्य के भागी बनेंगे। ५१००/- रूपये से अधिक का पवित्र दान देनेवाले का नाम दान दाताओं की स्वर्णिम सूची में अंकित किया जायेगा।

सत्यानन्द आर्य (प्रधान)
मो. 9313923155

दर्शन कुमार अग्निहोत्री (मंत्री)
मो. 9810033799

स्वामी धर्ममुनि जी
मो. 9813754084

ईशमुनि जी
मो. 9812640989

राजहंस मैत्रेय आचार्य
मो. 9813754084

विक्रमदेव शास्त्री
मो. 9896578062